राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, मंगलवार, 07 जुलाई 2026
वर्ष 14, अंक 89, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

सराय नदी किनारे रिवर फ्रंट पार्क बनाने की उठायी मांग...03

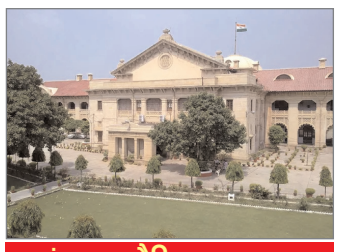

इस्लामाबाद बन सकता है अमेरिका ईरान वार्ता का अगला मेजबान...04

‘तेजो महालय’ दावे पर इलाहाबाद हाई कोर्ट सख्त, केंद्र- ASI को नोटिस, मांगा जवाब

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने सोमवार को केंद्र और आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ASI) को नोटिस जारी करके उनसे उस याचिका पर जवाब मांगा है, जिसमें आगरा कोर्ट के ताजमहल के सर्वे से मना करने के आदेश को चुनौती दी गई है. जस्टिस रोहित रंजन अग्रवाल की बेंच ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश एडवोकेट हरि शंकर जैन की बात सुनने के बाद यह आदेश दिया. याचिकाकर्ता का दावा है कि दुनिया भर में मशहूर यह स्मारक असल में भगवान शिव को समर्पित 'तेजो महालय' नाम का एक पुराना हिंदू मंदिर है. बता दें, आगरा कोर्ट ने ताजमहल का इंस्पेक्शन, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी करने के लिए एडवोकेट-कमिश्नर नियुक्त करने से इनकार कर दिया था. यह याचिका देवता 'भगवान श्री अग्रेश्वर महादेव नागनाथेश्वर विराजमान' की ओर से, उनके नेक्स्ट फ्रेंड, एडवोकेट हरि शंकर जैन और कई अन्य भक्तों के जरिए दायर की गई है.

तामहल एक हिंदू मंदिर... याचिकाकर्ता का दावा

पीटीआई न्यूज के अनुसार याचिकाकर्ता ने इस बात की घोषणा और रोक लगाने की मांग की कि यह स्मारक एक हिंदू मंदिर है और इसलिए, याचिकाकर्ताओं और हिंदू समुदाय के सदस्यों को ताजमहल के अंदर पूजा करने की इजाजत दी जाए. उन्होंने खास तौर पर कहा था कि हिंदुओं को भारत के संविधान के आर्टिकल 25 के तहत स्मारक के अंदर 'दर्शन' और 'पूजा' करने का बुनियादी अधिकार है. 2019 में, ताजमहल का सर्वे करने के लिए एक एडवोकेट कमिश्नर की नियुक्ति के लिए एक एप्लीकेशन दी गई थी. हालांकि, एडिशनल सिविल जज (सीनियर डिवीजन), आगरा ने इस आधार पर आवेदन खारिज कर दी कि वादी सही गाटा नंबर का पता लगाने के लिए रेवेन्यू डॉक्यूमेंट (जैसे खसरा या खतौनी) फाइल करने में नाकाम रहे, और क्योंकि प्रॉपर्टी की बताई गई सीमाएं और एरिया (77 बीघा) डिफेंडेंट्स के डॉक्यूमेंट्स से मेल नहीं खाते थे. इस साल अप्रैल में आगरा के एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज ने इस ऑर्डर के खिलाफ एक रिवीजन पिटीशन को नॉन-मेंटेनेबल माना था. इन दोनों ऑर्डर को चैलेंज करते हुए, केस करने वालों ने हाई कोर्ट का रुख किया, जिसमें उन्होंने ओरिजिनल केस में किए गए इन खास हिस्टोरिकल और आर्किटेक्चरल क्लेम का जिक्र किया हैः तेजो महालय का पुराना मंदिर, जिसमें देवता अग्रेश्वर महादेव नागनाथेश्वर विराजमान विराजमान हैं, राजा परमर्दि देव ने 1155-56 ई. में बनवाया था.

शाहजहां ने राजा जय सिंह से ‘तेजो महालय’ महल था छीना

समय के साथ, यह स्मारक राजा मान सिंह के कंट्रोल और ओनरशिप में आ गया और बाद में 17वीं सदी में जयपुर के राजा जय सिंह ने इसे अपने पास रखा. मुगल शासक शाहजहां ने राजा जय सिंह से 'तेजो महालय' महल छीनकर उसे अपनी मृत रानी की याद में एक मेमोरियल में बदल दिया. इस कन्वर्जन के लिए, उस स्मारक के कुछ हिस्सों में कुछ इस्लामिक खासियतें शामिल करने के लिए बदलाव किए गए थे. कम से कम 109 आर्कियोलॉजिकल खासियतें और ऐतिहासिक सबूत हैं जो बिना किसी शक के यह साबित करते हैं कि जिस प्रॉपर्टी पर मुकदमा चल रहा है वह एक हिंदू मंदिर है. मार्बल के गुंबद के ऊपर एक 'कलश' है और वह 'कमल की पंखुड़ियों से सजा हुआ है', जो एक हिंदू पूजा की जगह को दिखाता है. जिस प्रॉपर्टी पर मुकदमा चल रहा है, उसके दक्षिण-पूर्व कोने पर एक स्ट्रक्चर आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के रिकॉर्ड में 'गौशाला' के तौर पर दर्ज है, जो हर हिंदू मंदिर कॉम्प्लेक्स का एक जरूरी हिस्सा है, लेकिन मुस्लिम मकबरे का नहीं.

नमाज पढ़ने देने की इजाजत गैरकानूनी

मुकदमे में यह भी दावा किया गया है कि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ASI) ने 'गैर-कानूनी' तरीके से मुसलमानों को शुक्रवार को 'नमाज' पढ़ने की इजाजत दी थी, जबकि आने-जाने पर रोक लगा दी थी और बिल्डिंग कॉम्प्लेक्स के कई फ्लोर बंद कर दिए थे. केस करने वालों का दावा है कि हिंदू 'पूजा' और भगवान की पूजा के अलावा दूसरे कामों के लिए उस प्रॉपर्टी का इस्तेमाल गैर-कानूनी है. इस ऑर्डर के बारे में, याचिकाकर्ता का कहना है कि कोर्ट का तर्क 'पेटेंट' है. उनका कहना है कि आवेदन को ऐसी बातों पर खारिज कर दिया गया जो कमिश्नर की नियुक्ति के मकसद से पूरी तरह बेमतलब हैं. याचिका में इस बात पर जोर दिया गया है कि मुकदमे वाली प्रॉपर्टी की पहचान को लेकर कोई विवाद नहीं है, क्योंकि यह एक जाना-माना पुराना स्मारक है. इसके अलावा, पिटीशनर्स का तर्क है कि स्मारक की फिजिकल खासियतें, बनावट की खासियतें और बंद हिस्से सिर्फ मौखिक सबूतों से असरदार तरीके से साबित नहीं किए जा सकते. उनका कहना है कि ASI के कंट्रोल वाले स्मारक तक उनकी बिना रोक-टोक वाली पहुंच नहीं है, जिससे असरदार फैसले के लिए कोर्ट का अपॉइंट किया गया फोटोग्राफर और वीडियोग्राफर जरूरी हो जाता है. इस पृष्ठभूमि में याचिकाकर्ता ने प्रार्थना की है कि हाई कोर्ट आगरा कोर्ट के आदेशों को रद्द करे और ट्रायल कोर्ट को एडवोकेट-कमिश्नर के लिए एप्लीकेशन पर उसकी मेरिट के आधार पर फैसला करने का निर्देश दे. इसके अलावा, एक अंतरिम रोक एप्लीकेशन में अनुरोध किया गया है कि हाई कोर्ट ASI के डायरेक्टर को पिटीशनर्स की मौजूदगी में बिल्डिंग के अंदर और बाहर से फोटो लेने और उन्हें मौजूदा कार्रवाई में फाइल करने का निर्देश दे.

राम मंदिर में कितना आया चढ़ावा, कितना हुआ खर्च? सामने आया पूरा हिसाब-किताब

राम मंदिर में चढ़ावा चोरी के बाद सोमवार को राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक के बाद श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र की ओर से जारी बयान में राम मंदिर में कितना चढ़ावा आया और कितना खर्च हुआ है. इसकी जानकारी दी गयी है. जारी बयान में कहा गया है कि निधि समर्पण अभियान एवं कॉर्पस दान के माध्यम से प्राप्त कुल राशि 3,264 करोड़ रुपए में से 2,370 करोड़ रुपए निर्माण एवं पूंजीगत व्यय में उपयोग की गई है. बयान में कहा गया है कि आरंभ से लेकर 31 मार्च, 2026 तक कुल चढ़ावा 482 करोड़ रुपए प्राप्त हुआ, जिसमें से 319 करोड़ रुपए की राशि संचालन व्यय में उपयोग ली गई. शेष राशियां बैंक खातों में उपलब्ध हैं. ये समस्त वित्तीय सूचनाएं समय पर ट्रस्ट ने मीडिया के समक्ष प्रस्तुत की हैं. बयान में कहा गया कि चढ़ावे की राशि की गणना प्रक्रिया में अनियमितता से न्यासीगण आहत एवं चिंतित हैं और इस दुष्प्रकारी प्रकरण पर गंभीर खेद व्यक्त करते हैं.

SIT जांच पर ट्रस्ट ने जताया भरोसा

बयान में कहा गया कि इस प्रकरण की जानकारी प्राप्त होने पर पाया कि ट्रस्ट के अधिकारियों ने अनियमितता के संज्ञान में आने पर प्रारम्भिक जानकारी एकत्र करने के बाद उत्तर-प्रदेश शासन से निष्पक्ष जांच का आग्रह किया. बयान में कहा गया कि ट्रस्ट के अनुरोध पर शासन ने तत्काल उच्च स्तरीय जांच दल (एसआईटी) का गठन किया, ताकि पूरे मामले की निष्पक्ष, व्यापक और तथ्यपरक जांच हो सके. किसकी क्या भूमिका रही, किन लोगों की संलिप्तता है तथा किसके विरुद्ध मुकदमा दर्ज होना चाहिए–इन सभी प्रश्नों का उत्तर केवल जांच के आधार पर ही संभव था. इसी उद्देश्य से ऐसे जांच दल के गठन के अनुरोध की पहल की गई. बयान में कहा गया कि एस आई टी की प्रारम्भिक रिपोर्ट में 8 लोगों के नाम सामने आए. जिनके विरुद्ध प्रथम दृष्ट्या साक्ष्य मिले, उनके विरुद्ध ट्रस्ट ने मुकदमा दर्ज कराया और गिरफ्तारियां भी हुई. अब पूरा मामला कानून के अनुसार आगे बढ़ रहा है.

जो दोषी है, उसे मिले कठोरतम दंड

बयान में कहा गया कि ट्रस्ट का स्पष्ट मत है कि जो भी दोषी हो, उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होकर कठोरतम दंड मिलना चाहिए. एसआईटी का कार्यक्षेत्र सिर्फ जांच तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह सुझाव देना भी है कि ट्रस्ट की व्यवस्थाओं में क्या आवश्यक सुधार करने चाहिए जिससे व्यवस्था और अधिक सुदृढ़, मजबूत एवं पारदर्शी हो सके. बयान में कहा गया कि एसआईटी की प्रारम्भिक रिपोर्ट आने के बाद महामंत्री चंपत राय और एक ट्रस्टी अनिल मिश्र ने नैतिक आधार पर त्यागपत्र दिया है, जिन्हें आज ट्रस्ट की बैठक में विचारार्थ प्रस्तुत किया गया. ट्रस्ट ने निष्पक्ष जांच हेतु नैतिक आधार पर दिये दोनों के त्यागपत्र को स्वीकार किया है. साथ ही ट्रस्ट ने श्री गोपाल नारकोटे का नाम विशेष आमंत्रित सदस्य सूची से हटाने का निर्णय किया है. ट्रस्ट का मानना है कि जांच की वैधानिक प्रक्रिया पूरी होने पर सत्य प्रकाशित होगा और तब तक किसी भी व्यक्ति पर दोषारोपण करना उचित नहीं है.

चढ़ावा चोरी के बाद आज हुई ट्रस्ट की बैठक

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र के न्यासियों की बैठक सोमवार को अयोध्या में सम्पन्न हुई. इसमें प्रमुख रूप से दानपात्रों से प्राप्त राशि की गणना की प्रक्रिया में अनियमितता, उसकी जांच और कार्यवाही, महामंत्री और एक न्यासी के न्यासी पद से त्यागपत्रों, मीडिया में चल रही चर्चाओं, भावी अन्तरिम व्यवस्थाओं आदि विषयों पर विचार हुआ. बयान में कहा गया है कि 2020 में ट्रस्ट की स्थापना के पश्चात 6 वर्ष से कम के अल्पकाल में प्रभु श्री रामलला के भव्य और अप्रतिम मंदिर के निर्माण का ऐतिहासिक कार्य सम्पूर्ण हुआ. इसी अवधि में मुख्य मंदिर एवं परकोटे में बने समस्त मंदिरों में प्राण-प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण और श्रीराम यंत्र की स्थापना के महती कार्य प्रभु कृपा से सानंद और शास्त्रीय विधि विधान से सम्पन्न हुए

संक्षिप्त ख़बरें

यूपी में बदला एक और नाम, जलालाबाद हुआ ‘परशुराम पुरी’... योगी कैबिनेट में 27 प्रस्तावों पर मुहर

योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश में 27 बड़े फैसले लिए हैं. यूपी कैबिनेट ने अलग-अलग क्षेत्रों में 27 प्रस्तावों को मंजूरी दी है. इन प्रस्तावों में यूपी के नाम बदलने का सिलसिला एक कदम और बढ़ गया है. यहां शाहजहांपुर में जलालाबाद के नाम बदलने के फैसले को भी सहमति मिली है. ऐसे में एक और नाम बदलने के बाद अब जलालाबाद 'भगवान परशुराम पुरी'के नाम से जाना जाएगा. ये जगह भगवान परशुराम की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है.ऐसे में जनप्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों की मांग पर ये फैसला लिया गया. इसका नाम मुगल सम्राट अकबर (जलाल-उद-दीन मुहम्मद अकबर) के नाम पर रखा गया था. राज्य सरकार ने 2016 में जलालाबाद को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना शुरू किया.

स्टार्टअप मिशन को मंजूरी

कैबिनेट के फैसले में मंत्री सुनील शर्मा को आई टी एंड इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग सौंपा गया है. इस फैसले में उत्तर प्रदेश में निवेश हेतु 'स्टार्टअप मिशन' की स्थापना हेतु प्रस्ताव को मंजूरी मिली. उत्तरप्रदेश स्टार्टअप नीति 2026, उत्तरप्रदेश डेटा सेंटर नीति 2026 को मंजूरी मिली. मंत्री धर्मपाल सिंह को पशुधन एवं दुग्ध विकास विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई. मुख्यमंत्री जोखिम प्रबंधन एवं पशुधन बीमा योजना प्रस्ताव को कैबिनेट की मंजूरी मिली.
पशुधन बीमा योजना की मंजूरी

लघु एवं सीमांत कृषकों,पशुपालकों,डेयरी फार्म पशुपालकों के द्वारा पाले जा रहे पशुओं को सुरक्षित एवं किसी महामारी,या पशु अपंग या मृत्यु होने पर,पशुओं का बीमा कराने के दृष्टिगत मुख्यमंत्री जोखिम प्रबंधन एवं पशुधन बीमा योजना की मंजूरी, समस्त 75 जनपदों में लागू किया जाएगा. इसमें राज्यांश 85%,लाभार्थी अंश 15% होगा. मंत्री अनिल राजभर, श्रम एवं सेवायोजन विभाग सौंपा गया है. उत्तरप्रदेश के श्रमिकों के इलाज हेतु गोरखपुर, मुरादाबाद 100-100 बेड के अस्पताल के निर्माण व वाराणसी में श्रम विभाग द्वारा ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज निर्माण के प्रस्ताव को मंजूरी मिली है. इसके लिए निःशुल्क जमीन आवंटन का प्रस्ताव को अनुमोदित कर लिया गया है.

यूपी में बदला एक और नाम, जलालाबाद हुआ ‘परशुराम पुरी’... योगी कैबिनेट में 27 प्रस्तावों पर मुहर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश में 27 बड़े फैसले लिए हैं. यूपी कैबिनेट ने अलग-अलग क्षेत्रों में 27 प्रस्तावों को मंजूरी दी है. इन प्रस्तावों में यूपी के नाम बदलने का सिलसिला एक कदम और बढ़ गया है. यहां शाहजहांपुर में जलालाबाद के नाम बदलने के फैसले को भी सहमति मिली है. ऐसे में एक और नाम बदलने के बाद अब जलालाबाद 'भगवान परशुराम पुरी'के नाम से जाना जाएगा. ये जगह भगवान परशुराम की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है. ऐसे में जनप्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों की मांग पर ये फैसला लिया गया. इसका नाम मुगल सम्राट अकबर (जलाल-उद-दीन मुहम्मद अकबर) के नाम पर रखा गया था. राज्य सरकार ने 2016 में जलालाबाद को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना शुरू किया.

स्टार्टअप मिशन को मंजूरी

कैबिनेट के फैसले में मंत्री सुनील शर्मा को आई टी एंड इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग सौंपा गया है. इस फैसले में उत्तर प्रदेश में निवेश हेतु 'स्टार्टअप मिशन' की स्थापना हेतु प्रस्ताव को मंजूरी मिली. उत्तरप्रदेश स्टार्टअप नीति 2026, उत्तरप्रदेश डेटा सेंटर नीति 2026 को मंजूरी मिली. मंत्री धर्मपाल सिंह को पशुधन एवं दुग्ध विकास विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई. मुख्यमंत्री जोखिम प्रबंधन एवं पशुधन बीमा योजना प्रस्ताव को कैबिनेट की मंजूरी मिली.

स्टार्टअप मिशन को मंजूरी

कैबिनेट के फैसले में मंत्री सुनील शर्मा को आई टी एंड इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग सौंपा गया है. इस फैसले में उत्तर प्रदेश में निवेश हेतु 'स्टार्टअप मिशन' की स्थापना हेतु प्रस्ताव को मंजूरी मिली. उत्तरप्रदेश स्टार्टअप नीति 2026, उत्तरप्रदेश डेटा सेंटर नीति 2026 को मंजूरी मिली. मंत्री धर्मपाल सिंह को पशुधन एवं दुग्ध विकास विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई. मुख्यमंत्री जोखिम प्रबंधन एवं पशुधन बीमा योजना प्रस्ताव को कैबिनेट की मंजूरी मिली.

कागभुशंडी, राम चरित मानस और पादुकाए राम मंदिर ट्रस्ट बोला- 2800 सामग्रियां सुरक्षित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीराम मंदिर ट्रस्ट की बैठक में सोमवार को जहां चंपत राय और अनिल मिश्रा के इस्तीफे को मंजूर कर लिया गया. वहीं ट्रस्ट की तरफ से एक बड़ा दावा भी किया गया. ट्रस्ट ने कहा कि राम मंदिर को दान में मिली 2800 सामग्रियां बिल्कुल सुरक्षित हैं. जिनमें कागभुशंडी, राम चरित मानस और पादुकाएं शामिल हैं. ट्रस्ट की बैठक के बाद, कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी ने बताया कि दान में मिली सभी सामग्रियां का पूरा रिकॉर्ड और रजिस्टर रखा जाता है. दान में मिली सभी सामग्रियां पूरी तरह से सुरक्षित हैं. गोविंदानंद गिरि ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में मीडिया और जनता से भावुक अपील की. ??उन्होंने बताया कि मीडिया में कई तरह की अफवाहें फैल रही थीं और लोग दावा कर रहे थे कि कुछ सामग्रियां गायब हो गई हैं; लेकिन उन्होंने सबको भरोसा दिलाया कि सब कुछ सुरक्षित है. उन्होंने जोर देकर कहा कि भले ही मीडिया में बहुत कुछ कहा जा रहा हो, लेकिन जनता को असली सच्चाई पता होनी चाहिए.

रजिस्टर दिखाकर किया दावा

इस दौरान गोविंदानंद गिरि ने अब तक मिली बेशकीमती सामग्रियां गायब का ब्यौरा वाला रजिस्टर दिखाया. उन्होंने बताया कि उनके पास 2,800 सामग्रियां का रिकॉर्ड है और वे सभी सुरक्षित हैं. गिरि ने कहा कि उनके भविष्य के कामों पर कोई उंगली नहीं उठा पाएगा और उन्होंने प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए ट्रस्ट की प्रतिबद्धता दोहराई.

राजनीतिक पार्टियों पर भी निशाना साधा

उन्होंने आरोप लगाने वाली राजनीतिक पार्टियों पर भी निशाना साधा और कहा कि जिन लोगों ने पहले अदालत में भगवान राम के अस्तित्व पर ही सवाल उठाए थे, वे अब तरह-तरह के दावे कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि राम मंदिर चंदा चोरी मामले में सभी दुखी हैं, उन्होंने कहा राम मंदिर से चंदा की चोरी की घटना से हमें बहुत दुख और गहरी पीड़ा हुई है. चोरी कितनी बड़ी या छोटी थी, यह मायने नहीं रखता; असल बात यह है कि ऐसी घटना हुई ही क्यों, और यही बात बहुत दुखद है. हम इस घटना से बहुत आहत हैं.

ट्रस्ट की बैठक अब 22 जुलाई को होगी

चंपत राय और अनिल मिश्रा के इस्तीफे के बाद, ट्रस्ट में तीन ट्रस्टी पद खाली हो गए हैं. इन पदों पर नियुक्ति के लिए ट्रस्ट की बैठक 22 जुलाई को बुलाई गई है. इस बीच, खाली पदों के लिए सही उम्मीदवारों को चुनने की जिम्मेदारी कृष्ण मोहन को सौंपी गई है. इन नामों को 22 जुलाई की बैठक में अंतिम मंजूरी मिलेगी. इसके अलावा, SIT की अंतिम रिपोर्ट पर भी चर्चा होने की संभावना है.

इंडोनेशिया खरीदेगा ब्रह्मोस की बैटरियां, रक्षा साझेदारी होगी मजबूत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार से इंडोनेशिया के तीन दिवसीय (6 से 8 जुलाई) बेहद खास दौरे पर हैं. इस यात्रा के दौरान भारत और इंडोनेशिया के बीच 'ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल' की खरीद को लेकर एक बहुत बड़ी डील फाइनल हो सकती है. रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस डील के बाद इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की मनमानी पर पूरी तरह लगाम लग जाएगी. रक्षा सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, इंडोनेशिया मार्च 2026 में हुए शुरुआती समझौते के बाद अब भारत से और ज्यादा ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम (अतिरिक्त बैटरियां) खरीदना चाहता है. पहली डील करीब 200 से 350 मिलियन डॉलर (लगभग 1,600 से 2,900 करोड़ रुपये) की थी, जो तटीय सुरक्षा (Coastal Defence) के लिए थी। अब इस डील को अगले चरण में ले जाने की तैयारी है.

क्यों खास है यह डील?

दुश्मन का बचना नामुमकिनः भारत और रूस द्वारा मिलकर बनाई गई ब्रह्मोस दुनिया की सबसे खतरनाक सुपरसोनिक मिसाइल है. 290 किलोमीटर से ज्यादा की रेंज और आवाज से भी तेज रफ्तार की वजह से दुश्मन का इसके आगे टिक पाना नामुमकिन है.इंडोनेशिया की मजबूरी और जरूरतः इंडोनेशिया 17,000 से ज्यादा छोटे-बड़े द्वीपों का देश है. अपनी समुद्री सीमाओं की रक्षा करने के लिए उसे ब्रह्मोस जैसी अचूक मिसाइल की सख्त जरूरत है. चीन के खिलाफ 'ब्रह्मोस बेल्ट': फिलीपींस के बाद इंडोनेशिया दूसरा ऐसा दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश बनने जा रहा है, जो भारत से ब्रह्मोस खरीद रहा है. वियतनाम के साथ भी बातचीत अंतिम दौर में है. यानी चीन के चारों तरफ मित्र देशों की एक 'ब्रह्मोस बेल्ट' तैयार हो रही है. इस दौरे में केवल मिसाइल बेचने पर ही बात नहीं होगी, बल्कि इंडोनेशिया मिसाइल से जुड़ी कुछ टेक्नोलॉजी (Transfer of Technology) भी चाहता है. इसके अलावा, इंडोनेशिया के पास 'निकल' (Nickel) जैसी कीमती धातुओं का भारी भंडार है, जो रक्षा उपकरणों को बनाने में काम आती हैं. इस यात्रा में इन खनिजों को लेकर भी कई अहम समझौतों (MoUs) पर दस्तखत हो सकते हैं.

भारत की ‘एक्ट ईस्ट पॉलिसी’ को मिलेगी मजबूती

प्रधानमंत्री मोदी की इस यात्रा से भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' (पूर्वी देशों के साथ मजबूत रिश्ते) और दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी को एक नई दिशा मिलेगी. रक्षा सूत्रों का कहना है कि दोनों देश मिलकर समंदर में सुरक्षा, साझा सैन्य अभ्यास और डिफेंस इंडस्ट्री को आगे बढ़ाने पर लगातार काम कर रहे हैं.

राम मंदिर में तिरुपति मॉडल लागू करने की तैयारी, CEO की नियुक्ति के लिए बनी हाई-पावर कमेटी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

राम मंदिर चढ़ावा चोरी के बाद सोमवार को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ ट्रस्ट की बैठक हुई. इस बैठक में तिरुपति मंदिर के मॉडल के आधार पर CEO नियुक्ति के लिए कमेटी बनी है. ट्रस्ट ने CEO के चयन के लिए तीन सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति बनाई है. इस समिति में न्यायपालिका और सेना के अनुभवी अधिकारियों को शामिल किया गया है. समिति में शामिल सदस्य हैं– सेवानिवृत्त न्यायाधीश प्रमोद कोहली, सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल विष्णुकांत और सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल सुरेश हावड़े शामिल हैं. यह समिति CEO पद के लिए योग्य उम्मीदवारों का चयन करेगी और अपनी सिफारिश ट्रस्ट के समक्ष रखेगी. इससे पहले श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने सोमवार को चढ़ावा चोरी के आरोपों के बाद महामंत्री चंपत राय और सदस्य अनिल मिश्रा का इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया. ट्रस्ट की तीन घंटे चली मीटिंग के बाद कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी ने मीडिया को बताया कि कृष्ण मोहन को मंदिर ट्रस्ट के अंतरिम महासचिव की अतिरिक्त जिम्मेदारी दी गयी है.

चढ़ावा चोरी आरोप को लेकर हुई ट्रस्ट की बैठक

मंदिर के चढ़ावा में हेराफेरी के नतीजों पर चर्चा के लिए बैठक दोपहर 3.15 बजे राम जन्मभूमि परिसर के अंदर गेस्ट हाउस में शुरू हुई, जिसमें ट्रस्ट के चेयरमैन नृत्य गोपाल दास समेत नौ में से सात स्थायी सदस्य मौजूद थे. सूत्रों ने बताया कि चंदन राय और अनिल मिश्रा बैठक में शामिल नहीं हुए. बैठक शाम करीब 6.30 बजे खत्म हुई. कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी ने मंदिर ट्रस्ट के इंतजामों में कमियों को माना और कहा कि राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी से लाखों भक्तों को बहुत दुख हुआ है. चढ़ावे की कथित चोरी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, 'लाखों राम भक्तों को दुख हुआ है,' साथ ही ट्रस्ट के मैनेजमेंट में कमियों को भी माना.

जानें बैठक में कौन-कौन हुए शामिल

बैठक की अध्यक्षता महंत नृत्य गोपाल दास ने की, जबकि गोविंद गिरि ने एजेंडा पेश किया.मौजूद लोगों में ट्रस्ट के सदस्य विश्व तीर्थ प्रसन्नाचार्य, स्वामी परमानंद गिरि, जगद्गुरु बासुदेवानंद सरस्वती, कृष्ण मोहन, महंत दिनेंद्र दास, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट शशांक त्रिपाठी (एक्स-ऑफिशियो मेंबर), विहिप नेता दिनेश चंद्र और विशेष आमंत्रित के तौर पर महंत कमल नयन दास शामिल थे. ट्रस्ट संयोचक के परासन, प्रधान सचिव (गृह) संजय प्रसाद, सेंट्रल सेक्रेटरी प्रशांत लोखंडे और मंदिर कंस्ट्रक्शन कमिटी के चेयरमैन नृपेंद्र मिश्रा ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मीटिंग में हिस्सा लिया.

संपादकीय

भारत में एथेनॉल पर बवाल

भारत में एथेनॉल अब केवल एक जैव ईंधन नहीं रह गया है, बल्कि यह राजनीति, अर्थव्यवस्था, कृषि और पर्यावरण के चौराहे पर खड़ा एक ऐसा विषय बन चुका है जिस पर तीखी बहस छिड़ी हुई है। सरकार इसे ऊर्जा आत्मनिर्भरता और किसानों की आय बढ़ाने का माध्यम बता रही है, जबकि आलोचकों का कहना है कि इस नीति के कई ऐसे पहलू हैं जिन पर अभी गंभीर चर्चा और वैज्ञानिक मूल्यांकन की आवश्यकता है। देश में पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रण (E20) लागू होने के बाद विवाद और तेज हो गया है। एक ओर सरकार का दावा है कि इससे कच्चे तेल के आयात में कमी आएगी, विदेशी मुद्रा बचेगी और किसानों को नया बाजार मिलेगा। दूसरी ओर वाहन मालिकों, कुछ विशेषज्ञों और याचिकाकर्ताओं ने पुराने वाहनों की अनुकूलता, माइलेज, कृषि संसाधनों और खाद्य सुरक्षा जैसे प्रश्न उठाए हैं। इन मुद्दों पर न्यायालयों तक में सुनवाई हो चुकी है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयातित कच्चे तेल से पूरा करता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव का सीधा असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसे में सरकार ने जैव ईंधन को बढ़ावा देने की रणनीति अपनाई, जिसके तहत गन्ने के शीरे, मक्का और अन्य कृषि स्रोतों से बनने वाले एथेनॉल को पेट्रोल में मिलाया जाने लगा। इस नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य रहे— कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करना, किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत तैयार करना। कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना। विवाद की शुरुआत तब हुई जब E20 ईंधन देशभर में व्यापक रूप से उपलब्ध होने लगा। कई वाहन मालिकों ने आशंका जताई कि पुराने वाहन इस ईंधन के लिए पूरी तरह उपयुक्त नहीं हैं। कुछ लोगों ने माइलेज घटने की शिकायत की, जबकि सोशल मीडिया पर इंजन खराब होने जैसे दावे भी वायरल हुए। सरकार और उद्योग संगठनों ने इन दावों का खंडन करते हुए कहा कि आधुनिक E20-अनुकूल वाहनों में ऐसी समस्याएं नहीं हैं और कई वायरल दावे वैज्ञानिक आधार से परे हैं। हालांकि सरकार ने यह भी कहा है कि निर्माताओं के प्रभावों का लगातार मूल्यांकन किया जाएगा। एथेनॉल नीति का सबसे बड़ा लाभ गन्ना किसानों और चीनी मिलों को मिला है। चीनी की अतिरिक्त उपलब्धता के समय एथेनॉल उत्पादन ने मिलों की आय बढ़ाई और किसानों के बकाया भुगतान में मदद की। लेकिन विशेषज्ञ यह भी चेतावनी देते हैं कि यदि गन्ना और मक्का जैसी फसलों पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ी तो कृषि का संतुलन बिगड़ सकता है। इससे दालों और तिलहनों जैसी आवश्यक फसलों का क्षेत्र घटने का खतरा पैदा हो सकता है, जो खाद्य सुरक्षा और पोषण दोनों के लिए चुनौती बन सकता है। भारत के कई हिस्से पहले से ही जल संकट का सामना कर रहे हैं। ऐसे में यह बहस भी उठी कि यदि एथेनॉल उत्पादन के लिए अधिक गन्ने की खेती होगी तो भूजल पर दबाव बढ़ेगा। सरकार का कहना है कि आधुनिक एथेनॉल संयंत्रों में जल का पुनर्चक्रण किया जाता है और सोशल मीडिया पर प्रसारित कई दावे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए गए हैं। फिर भी विशेषज्ञ मानते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों की जल उपलब्धता को ध्यान में रखकर फसल नीति बनाना आवश्यक होगा। हाल के दिनों में कुछ उपभोक्ताओं ने E20 के बजाय महंगा प्रीमियम पेट्रोल खरीदना शुरू कर दिया। इसकी एक वजह यह धारणा है कि प्रीमियम ईंधन बेहतर माइलेज देता है। हालांकि यह धारणा हर वाहन पर समान रूप से लागू नहीं होती और इसका संबंध वाहन की तकनीक तथा निर्माता की सिफारिशों से भी है। सरकार का तर्क है कि यदि भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना है तो जैव ईंधन जैसे विकल्पों को अपनाना ही होगा। इसके साथ ही भविष्य में फ्लेक्स-फ्यूल और अन्य वैकल्पिक ईंधनों पर भी काम किया जा रहा है।लेकिन किसी भी बड़ी नीति की सफलता केवल उसके उद्देश्य से नहीं, बल्कि उसके क्रियान्वयन से तय होती है। यदि वाहन निर्माता, तेल कंपनियां, किसान और उपभोक्ता सभी को समान रूप से तैयार नहीं किया गया तो विवाद बने रहेंगे। एथेनॉल पर चल रही बहस का समाधान किसी एक पक्ष की जीत में नहीं, बल्कि संतुलित नीति में है। सरकार को चाहिए कि वह स्वतंत्र वैज्ञानिक अध्ययन सार्वजनिक करे, पुराने वाहनों के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करे, जल-संकट वाले क्षेत्रों में फसल विविधीकरण को बढ़ावा दे और किसानों को केवल गन्ने या मक्का तक सीमित न रखे। साथ ही उपभोक्ताओं की आशंकाओं का समाधान केवल विज्ञापनों से नहीं बल्कि पारदर्शी परीक्षणों और विश्वसनीय आंकड़ों से किया जाना चाहिए। न्यायपालिका, वैज्ञानिक संस्थानों, उद्योग और किसानों के बीच संवाद बढ़ाना भी उतना ही आवश्यक है। भारत की एथेनॉल नीति न तो पूरी तरह गलत है और न ही पूरी तरह निर्विवाद। यह ऊर्जा सुरक्षा, कृषि अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास है। लेकिन जितनी बड़ी इसकी संभावनाएं हैं, उतनी ही बड़ी इसकी चुनौतियां भी हैं। यदि सरकार वैज्ञानिक तथ्यों, पारदर्शिता और जनविश्वास के आधार पर आगे बढ़ती है, तो एथेनॉल भारत की ऊर्जा क्रांति का महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है। लेकिन यदि उपभोक्ताओं की चिंताओं, जल संकट और खाद्य सुरक्षा जैसे मुद्दों की अनदेखी हुई, तो यही नीति भविष्य में और बड़े विवाद का कारण भी बन सकती है।

राजीव शुक्ला -(संपादक)

भारत की एकता और प्रगति के प्रति समर्पित एक जीवन

नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री)

आज, 6 जुलाई का दिन राष्ट्रवाद और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में विश्वास रखने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत ही विशेष है। आज हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जन्म-जयंती मना रहे हैं। उनका जीवन साहस और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व में विद्वता, जनसेवा और उच्च नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम था। आधुनिक भारत के कुछ ही नेताओं में इतने सारे गुण एक साथ देखने को मिलते हैं। श्यामा प्रसाद जी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जहां उन्हें सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन आसानी से मिल सकता था। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी की गिनती अपने समय के महान शिक्षाविदों में होती थी। लेकिन तमाम सुविधाओं के बावजूद श्यामा प्रसाद जी ने त्याग और राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना। उनका दृढ़ विश्वास था कि चाहे अंग्रेजी शासन का विरोध हो, सांप्रदायिकता से लड़ाई हो या मानवीय संकटों का सामना, वे अपने समय की इन चुनौतियों के सामने मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते। इस सफर में उन्हें कई गहरे व्यक्तिगत दुख भी झेलने पड़े। पहले उन्होंने अपने छोटे बच्चे को खोया और बाद में पत्नी का भी निधन हो गया। लेकिन इन दुखद परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने हौसले को कमजोर नहीं पड़ने दिया। उनका संकल्प और सशक्त हुआ, राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण और गहरा होता गया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना था। देश के विभाजन के समय उन्होंने पश्चिम बंगाल को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ वर्षों बाद इसी उद्देश्य से उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर भी संघर्ष किया। जेल और नजरबंदी भी उन्हें रास्ते से डिगा नहीं सकी। जब नजरबंदी के दौरान उनका निधन हुआ, तब वे उन अनगिनत लोगों से बहुत दूर थे, जिनके लिए वे जीवनभर संघर्ष करते रहे। इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी व्यक्ति का सर्वोच्च बलिदान राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्मृति का हिस्सा बन जाता है। डॉ. मुखर्जी का बलिदान भी ऐसा ही था। आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि डॉ. मुखर्जी ने उस उद्देश्य के लिए अपना बलिदान दिया, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था। दशकों बाद, साल 2019 में आर्टिकल 370 और 35(A) को हटाया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि थी। डॉ. मुखर्जी ने हमेशा राष्ट्रहित और भारतीय मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसके लिए उन्होंने मजबूत संस्थानों का निर्माण किया और ऐसी व्यवस्थाएं बनाईं, जो उस समय की सोच से काफी आगे थीं। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में ऐसे बदलाव किए, जो राष्ट्रहित और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप थे। शिक्षाविदों के एक सम्मेलन में डॉ. मुखर्जी ने कहा था, 'शिक्षण संस्थानों को केवल बाबू या कम वेतन वाले कर्मचारी तैयार करने की फैक्ट्री समझना गलत है। हमें विद्यार्थियों को ऐसे तैयार करना होगा ताकि वे नेतृत्व की भूमिका निभा सकें। हमारी स्वशासी संस्थाओं जैसे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन, प्रांतीय और केंद्रीय विधायिकाओं में बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार हो सकें। इसके साथ ही वे वित्त, व्यापार और उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा दिखा सकें।'' कलकत्ता विश्वविद्यालय में अपने नेतृत्व में उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। इनमें लाइब्रेरी की सुविधाओं में सुधार, विज्ञान में रिसर्च को बढ़ावा देना, ऐतिहासिक वस्तुओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और कृषि से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू करना शामिल था। उन्होंने खेलकूद, टीचर्स ट्रेनिंग और स्टूडेंट वेलफेयर जैसे क्षेत्रों पर भी विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियों में अपनी यूनिवर्सिटी के प्रति गर्व की भावना विकसित हो, इसके लिए उन्होंने 24 जनवरी को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाने की परंपरा शुरू की। उन्होंने गुरुदेव टैगोर से विश्वविद्यालय के लिए एक गीत लिखने का अनुरोध भी किया था। उनके जीवन के बाद के वर्षों में इस भावना का एक और उदाहरण तब देखने को मिला, जब उन्होंने भारतीय जनसंघ बनाने का निर्णय लिया। उस समय देश में हर तरफ कांग्रेस पार्टी का ही बोलबाला था। ऐसे में उन्होंने महसूस किया कि देश को एक ऐसे नए विकल्प की बहुत जरूरत है, जो भारत की प्रगति की बात भी करे और हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा रहे। शायद इसी को ध्यान में रखते हुए पार्टी का चुनाव चिह्न 'दीपक' यानि मिट्टी का दीया रखा गया। एक अकेला दीया देखने में भले ही छोटा लगे, लेकिन उसमें अपने आस-पास के गहरे से गहरे अंधकार को मिटाने की अद्भुत शक्ति होती है। जनसंघ ने अपने सक्रिय काल में और उसके बाद भी बिल्कुल यही किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का भारत के पहले उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री के रूप में कार्यकाल बेहद अहम रहा। उन्हें एक ऐसे राजनेता के रूप में याद किया जाता है, जिनका विजन बहुत विराट था। वे उद्योग को नए-नए आजाद हुए भारत के लोगों में सम्मान, अवसर और आत्मविश्वास का संचार करने का सशक्त माध्यम मानते थे। वे वेल्थ और वैल्यू क्रिएशन के महत्व को भली-भांति समझते थे। उन्होंने दामोदर वैली कॉरपोरेशन, सिंदरी उर्वरक संयंत्र और मजबूत औद्योगिक नीति जैसी ऐतिहासिक पहल की। इसके माध्यम से आधुनिक औद्योगिक भारत की नींव रखी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि भारत के पारंपरिक सामर्थ्य की कभी उपेक्षा न हो। वे हथकरघा, कुटीर उद्योग, कारीगरों और कपड़ा उद्योग से जुड़े श्रमिकों के हितों के भी प्रबल समर्थक थे। यहां मैं अपना एक निजी अनुभव भी साझा करना चाहता हूं। आत्मनिर्भर भारत के स्पष्ट विजन के साथ जिस सिंदरी संयंत्र की स्थापना के लिए डॉ. मुखर्जी ने अथक प्रयास किए थे, उसकी कई दशकों तक सत्ता में रहने वाले लोगों ने घोर उपेक्षा की। मुझे इस बात का संतोष है कि हमारी सरकार को उसके पुनरुद्धार का सौभाग्य मिला। उस कार्यक्रम में उपस्थित होना मेरे सार्वजनिक जीवन के सबसे विशेष और अविस्मरणीय क्षणों में से एक बन गया। भारत की प्राचीन परंपरा सदियों से संवाद और विचार-विमर्श का सम्मान करती आई है। डॉ. मुखर्जी इस लोकतांत्रिक भावना के सशक्त प्रतीक थे। उन्होंने पंडित नेहरू के मंत्रिमंडल में शामिल होना इसलिए स्वीकार किया, क्योंकि वे मानते थे कि देश की आजादी के शुरुआती वर्षों में राष्ट्र निर्माण का दायित्व राजनीतिक मतभेदों से कहीं ऊपर है। उन्होंने पूरी निष्ठा और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनी जिम्मेदारियों को निभाया। लेकिन जब उन्हें लगा कि राष्ट्रीय महत्व के कुछ प्रश्नों पर देशहित में अलग मार्ग अपनाना आवश्यक है, तो उन्होंने पूरी गरिमा के साथ अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन उस राजनीतिक लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पित कर दिया, जिसे वे राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते थे। 75 वर्ष पहले पंडित नेहरू पहला संविधान संशोधन लेकर आए। इसे अभिव्यक्ति की आजादी पर सीधा प्रहार माना गया। तब डॉ. मुखर्जी इसके सबसे मुखर आलोचक रहे थे। वे भली-भांति समझ चुके थे कि कांग्रेस किस हद तक जा सकती है। समय के साथ उनकी यह आशंका सही साबित हुई। जो पार्टी 75 वर्ष पहले पहला संविधान संशोधन लेकर आई थी, उसी ने 1975 में देश पर आपातकाल थोपा। इतना ही नहीं, 50 वर्ष पहले 42वां संविधान संशोधन अधिनियम लाकर एक बार फिर लोकतांत्रिक मूल्यों की बुनियाद पर कुठाराघात किया। डॉ. मुखर्जी अपनी मानवीय संवेदनाओं और सेवाभाव के लिए भी विशेष रूप से जाने जाते हैं। वर्ष 1943 में जब बंगाल भीषण अकाल की त्रासदी से जूझ रहा था, तब उन्होंने पीड़ितों की सेवा में स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि लोगों को भोजन मिल सके, जिसके लिए कई कैंटीन और रिलीफ सेंटर शुरू किए गए। एक ओर वे लोगों की पीड़ा से बहुत व्यथित थे, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश हुकूमत की असंवेदनशीलता से अत्यंत आक्रोशित भी थे। उन्होंने अपनी पीड़ा को व्यक्त करने के लिए पंचाशेर मन्वंतर नाम की एक किताब भी लिखी। 1942 में जब मेदिनीपुर में भीषण चक्रवात आया, तब उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों का नेतृत्व किया। कोलकाता के एक कॉलेज में युवाओं को संबोधित करते हुए डॉ. मुखर्जी ने उनसे आग्रह किया था, ''आप जो भी कार्य करें, उसे पूरी गंभीरता, लगन और ईमानदारी से करें। किसी भी काम को कभी अधूरा न छोड़ें। तब तक स्वयं को संतुष्ट न मानें, जब तक आपने उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान न दे दिया हो।'' आज हमारा देश विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम प्रतिदिन उस भारत के निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयास करें, जिसकी उन्होंने परिकल्पना की थी। एक ऐसा भारत जो सशक्त हो, एकजुट हो, आत्मविश्वास से भरपूर और संवेदनशील हो। देश के युवाओं पर मुझे पूरा विश्वास है कि वे इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए बढ़-चढ़कर भागीदारी करेंगे और इस संकल्प को साकार करने के लिए पूरी ऊर्जा के साथ जुट जाएंगे।

इकसठ की उम्र में तीसरा निकाह

समाज के लिए आदर्श नहीं है आमिर खान का दोहरा चरित्र!

आज आपको अभिनेता आमिर खान का टीवी शो सत्यमेव जयते याद दिलाते हैं जिसमें वह हिन्दू मान्यताओं को केंद्र में रखते हुए आलोचना कर अपना ज्ञान बांटते थे और सामाजिक न्याय एवं विज्ञान की व्याख्या करते नहीं थकते। वहीं आमिर खान ने एक वालीबुड फिल्म पीके बनायी और इसके जरिए हिन्दू धर्म की आस्था और श्रद्धा पर काफी उल्टा सीधा मनमाना फिल्माया और देवी देवताओं का मजाक उड़ाया लेकिन सेकुलरिज्म के नाम पर बहुसंख्यकों के धर्म और आस्था पर चोट करने के कल्चर को पैदा करने वाली तत्कालीन सरकार और उसके अधीनस्थ सेंसर बोर्ड ने फिल्म पर आई आपत्तियों को दरकिनार कर फिल्म को प्रदर्शन की मंजूरी दी थी। दरअसल अक्सर आरोप लगाया गया है कि आमिर पूरी तरह तास्सुबी और जेहादी जहनियत वाला अभिनेता है। इसने हिन्दू मान्यताओं पर तो प्रहार किया मजाक उड़ाया अनाप शनाप फिल्मांकन किया लेकिन कभी अपने इस्लाम धर्म के सम्बन्ध में एक शब्द एक दृश्य एक कमेंट तक कभी नहीं किया। इस जैहादी ने सभी हिन्दू युवतियों से निकाह किया। और तलाक दे दिया। इन से पैदा बच्चों के मुस्लिम नाम रखकर मुसलिम मजहब दिया। बॉलीवुड के ये स्वयंभू मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान तीसरी बार अपना घर बसाने जा रहे हैं. 61 साल की उम्र में वो अपनी गर्लफ्रेंड गौरी स्प्रैट संग शादी करेंगे, जिनकी उनसे काफी पुरानी दोस्ती रही. आमिर और गौरी पिछले कुछ सालों से एक-दूसरे को डेट कर रहे थे, मगर अब उन्होंने एक होने का फैसला किया है. 5 जुलाई, संडे को उनकी अपने ही घर में रजिस्टर्ड मैरिज होगी. आमिर के मुताबिक, वो एक छोटा सा सेलिब्रेशन रखेंगे, जिसमें उनके करीबी दोस्त और परिवार वाले ही मौजूद रहेंगे. बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान ने अपनी पहली शादी साल 1986 में रीना दत्ता से की थी। इस शादी से उनके दो बच्चे- जुनैद खान और आइरा खान हैं। आपसी सहमति से साल 2002 में दोनों का तलाक हो गया था। उन्होंने साल 2005 में फिल्म निर्देशक किरण राव से दूसरी शादी की। इस जोड़े का एक बेटा, आजाद राव खान है। साल 2021 में दोनों ने तलाक ले लिया, लेकिन वे आज भी अच्छे दोस्त हैं।आमिर खान 5 जुलाई 2026 को अपनी पार्टनर गौरी स्प्रैट (गौरी खान) के साथ तीसरी शादी कर रहे है। यह एक बहुत ही सादा और निजी समारोह होगा , जिसमें उनके घर पर केवल करीबी परिवार और दोस्त ही शामिल होंगे ।आमिर खान की होने वाली पार्टनर (और तीसरी पत्नी) गौरी स्प्रैट किसी एक विशेष रूढ़िवादी धर्म को मानने के बजाय एक विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आती है। उनका परिवार बहु-सांस्कृतिक (मल्टी-कल्चरल) है - उनकी मां तमिल मूल की हैं और पिता ब्रिटिश-आयरिश मूल के है। उनके दादा फिलिप स्प्रैट ब्रिटिश लेखक और भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे, जो 1920 के दशक में भारत आए थे। गौरी स्प्रैट वर्तमान में 47 वर्ष की हैं, जिनका जन्म 21 अगस्त 1978 को बेंगलुरु, कर्नाटक में हुआ था। गौरी स्प्रैट के बारे में कुछ मुख्य जानकारी वह 61 वर्षीय अभिनेता आमिर खान से उम्र में 14 साल छोटी है. वह बेंगलुरु की एक उद्यमी और फैशन-लाइफस्टाइल प्रोफेशनल है। पारिवारिक पृष्ठभूमि: उनकी मां तमिलियन और पिता आयरिश मूल के हैं। आमिर खान की तीसरी शादी को लेकर फैंस और फिल्म इंडस्ट्री में काफी उत्सुकता है. मिली जानकारी के मुताबिक, सुपरस्टार की शादी में 150 के आसपास मेहमान होने की संभावना है. एक करीबी सूत्रों का कहना है, शादी में करीब 100 से 150 मेहमान शामिल होंगे. इसमें दोनों परिवारों के लोग, करीबी दोस्त और फिल्म इंडस्ट्री के कुछ खास लोग ही मौजूद रहेंगे. आमिर और गौरी ने खुद मेहमानों की लिस्ट तैयार की है और शादी के लंच का मेन्यू भी अपनी पसंद से चुना है. सवाल फिर वही है कि आज तक आमिर खान उन मामलों पर क्यों नहीं बोलते जहां मुस्लिम पुरुष हिंदू महिलाओं को रिश्तों में फंसाने के लिए अपनी पहचान छुपाते हैं, जिससे जबरन धर्म परिवर्तन और धोखा होता है? साथ ही, वे अपने ही समुदाय के उन सदस्यों को सलाह क्यों नहीं देते जिन्होंने मुस्लिम लड़कियों से प्यार करने के लिए हिंदू लड़कों की हत्या कर दी ? बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान मुख्य रूप से उनके सामाजिक-राजनीतिक बयानों, फिल्मों में धार्मिक चित्रण, और उनकी व्यक्तिगत पसंदों को लेकर विवादास्पद रहें है। उन्हें अपने करियर में कई बार तीखी प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ा है। आपको याद दिला दें असहिष्णुता पर दिया गया बयान मुख्य विवाद का कारण बना था। साल 2015 में आमिर खान ने देश में बढ़ती असहिष्णुता पर एक बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि उनकी तत्कालीन पत्नी किरण राव को बच्चों की सुरक्षा के लिए भारत में डर लगता है और उन्होंने देश छोड़ने तक का विचार किया था।आलोचना का कारण: इस बयान को बड़े पैमाने पर 'राष्ट्र-विरोधी' और देश की छवि खराब करने वाला माना गया। इसके बाद उन्हें अतुल्य भारत इंक्रडिबल इंडिया ढ्ढठ्ठष्द्बह्म्द्गस्रद्बड्ढद्यद्ग ढ्ढठ्ठस्रद्बड्ड के ब्रांड एंबेसडर पद से भी हटा दिया गया था। इसी तरह फिल्मों में धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के आरोप 'पीके' फिल्म विवाद की जनक बनी। साल 2014 में आई फिल्म 'पीके' में हिंदू देवी-देवताओं और धार्मिक कर्मकांडों के चित्रण को लेकर उनकी भारी आलोचना हुई। आलोचकों और कई संगठनों ने उन पर 'हिंदू विरोधी' होने और 'लव जिहाद' को बढ़ावा देने के आरोप लगाए।बैंक विज्ञापन विवाद: साल 2022 में एक निजी बैंक के विज्ञापन में शादी के बाद दूल्हे को दुल्हन के घर जाते हुए दिखाया गया था, जिसे पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों के खिलाफ बताकर उनकी आलोचना की गई। हाल ही में तुर्किए के राष्ट्रपति और प्रथम महिला से मुलाकात कर अंतरराष्ट्रीय विवाद में भी आमिर खान का नाम जुड़ गया। साल 2020 में अपनी फिल्म की शूटिंग के दौरान आमिर खान ने तुर्किए (तुर्की) के राष्ट्रपति रेसेप तय्यिप एर्दोगन की पत्नी (प्रथम महिला) से मुलाकात की थी।आलोचना का कारण: तुर्किए द्वारा कश्मीर और अन्य भू-राजनीतिक मुद्दों पर भारत विरोधी और पाकिस्तान समर्थक रुख रखने के कारण, भारतीय नेटिजन्स ने आमिर की इस मुलाकात को असंवेदनशील माना और सोशल मीडिया पर उनकी फिल्मों के बहिष्कार की मांग की। राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में भागीदारीनर्मदा बचाओ आंदोलन: साल 2006 में उन्होंने मेधा पाटकर के 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' का समर्थन किया था, जो गुजरात में बांध निर्माण के खिलाफ था। इसके कारण गुजरात में उनकी फिल्म 'फना' का भारी विरोध और बहिष्कार हुआ था। फिल्म 'पीके' में, एक लालची पुजारी द्वारा दान पेटी से पैसे इकट्ठा करना, भगवान शिव के वेश में एक अभिनेता का डर के मारे भाग जाना, पत्थरों पर सिंदूर लगाकर लोगों को मूर्ख बनाना और हिंदू संतों को धोखेबाज के रूप में चित्रित करना, ये सभी दृश्य हिंदू धर्म को बदनाम करने वाले तरीके से दिखाए गए थे। यह दावा करना कि फिल्म 'पीके', जिसमें हिंदू धर्म की महानता को दर्शाने वाला एक भी दृश्य नहीं है, बल्कि धर्म का उपहास किया गया है, हिंदू विरोधी नहीं है, आमिर खान की बेईमानी और बेशर्मी का स्पष्ट उदाहरण है! टीवी शो में ज्ञान बांटने और बड़ी वैचारिकी व्यक्त करने वाला व्यक्ति निजी जीवन में कितना अलग और स्वार्थी व नारी शोषक हो सकता है इसका अंदाजा लगा पाना कितना कठिन हो सकता है और रील लाइफ व रियल लाइफ का अन्तर इससे समझा जा सकता है। कहा गया है कि 'हर आदमी में होते हैं दस बीस आदमी /जिसको भी देखना है कई बार देखिए।

मनोज कुमार अग्रवाल

दैनिक राशिफल

मेष -मेष राशि के जातकों के लिए आज का दिन आत्मविश्वास से भरपूर रहने वाला है। लंबे समय से अटके कार्य पूरे होने की संभावना बनेगी। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा और व्यापार से जुड़े लोगों को नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

वृषभ-वृषभ राशि के जातकों को आज आर्थिक मामलों में अनुकूल परिणाम मिलने के संकेत हैं। सोच-समझकर लिए गए निर्णय भविष्य में लाभ दिला सकते हैं। कार्यस्थल पर आपकी मेहनत की सराहना होगी।

मिथुन -मिथुन राशि के जातकों के लिए आज भाग्य का अच्छा साथ मिलने की संभावना है। करियर में नए अवसर सामने आ सकते हैं। विद्यार्थियों को अध्ययन में सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिए आज मानसिक संतुलन और आत्मविश्वास बना रहेगा। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। दांपत्य जीवन में आपसी समझ और मधुरता बढ़ेगी।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिए आज का दिन अनुकूल रहेगा। व्यापार में नए कार्यों से लाभ मिलने की संभावना है। लंबे समय से रुका धन प्राप्त हो सकता है। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा और धार्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ सकती है।

कन्या -कन्या राशि के जातकों को आज कार्यक्षेत्र में सफलता मिलने के अच्छे संकेत हैं। आत्मबल मजबूत रहेगा और स्वास्थ्य भी संतोषजनक रहेगा। आर्थिक मामलों में लिया गया समझदारी भरा निर्णय आगे चलकर लाभदायक सिद्ध हो सकता है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

तुला -तुला राशि के जातकों के लिए आज का दिन शुभ रहने वाला है। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिल सकते हैं। व्यापार में लाभ की स्थिति बनेगी और नए लोगों से संपर्क स्थापित होंगे। प्रेम संबंधों में मधुरता बनी रहेगी। किसी महत्वपूर्ण योजना पर काम शुरू हो सकता है।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों को आज अपनी मेहनत का अच्छा परिणाम मिलने की संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों में राहत मिल सकती है। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा। आर्थिक लाभ के योग बन रहे हैं और किसी पुराने विवाद का समाधान भी संभव है।

धनु -धनु राशि के जातकों के लिए आज भाग्य पूरी तरह अनुकूल रह सकता है। नौकरी और व्यापार दोनों क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम मिलने के संकेत हैं। विद्यार्थियों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों में रुचि बढ़ सकती है तथा मन प्रसन्न रहेगा।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिए आज आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं। नए अवसर प्राप्त हो सकते हैं और परिवार का पूरा सहयोग मिलेगा। कार्यक्षेत्र में बनाई गई योजनाएं सफल होने की संभावना है। वाहन चलाते समय सतर्कता बनाए रखना लाभदायक रहेगा।

कुंभ-कुंभ राशि के जातकों का आत्मविश्वास आज बढ़ा हुआ रहेगा। नए कार्यों में सफलता मिलने की संभावना है। नौकरी करने वालों को नई जिम्मेदारी या पद में उन्नति के अवसर मिल सकते हैं। व्यापार से जुड़े लोगों को लाभ होगा और स्वास्थ्य भी अनुकूल बना रहेगा।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिए आज का दिन शुभ और लाभदायक रहने के संकेत हैं। आत्मबल मजबूत रहेगा और करियर में आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक पक्ष मजबूत होने की संभावना है।

बारिश-प्रकृति का अमूल्य उपहार

> नदियां, तालाब, झीलें और बांध वर्षा के जल से भरते हैं। साथ ही, वर्षा का पानी जमीन में समाकर भूजल स्तर को बढ़ाता है, जिससे पीने के पानी और सिंचाई की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। आज जब दुनिया के अनेक हिस्सों में जल संकट गहराता जा रहा है, तब वर्षा जल संचयन का महत्व और भी बढ़ गया है। पर्यावरण की दृष्टि से भी बारिश का विशेष महत्व है। वर्षा वातावरण में मौजूद धूल, धुएं और प्रदूषक तत्वों को साफ कर देती है, जिससे वायु शुद्ध और ताजी हो जाती है।

बारिश प्रकृति द्वारा मानव जीवन को दिया गया एक अमूल्य उपहार है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती और वर्षा ही धरती पर जल का सबसे बड़ा स्रोत है। यह न केवल पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों और मनुष्यों के जीवन का आधार है, बल्कि पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए प्राचीन काल से ही वर्षा को ईश्वर का वरदान माना गया है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां की अधिकांश खेती मानसून पर निर्भर करती है। किसान पूरे वर्ष अच्छी वर्षा की प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि उनकी फसलों की सफलता समय पर और पर्याप्त मात्रा में होने वाली बारिश पर निर्भर करती है। अच्छी वर्षा होने पर खेत लहलहा उठते हैं, उत्पादन बढ़ता है और किसानों के जीवन में खुशहाली आती है। वहीं, वर्षा की कमी सूखे और अत्यधिक वर्षा बाढ़ जैसी समस्याओं को जन्म देती है। इसलिए संतुलित और समयानुकूल वर्षा अत्यंत आवश्यक है। बारिश प्राकृतिक जल स्रोतों को भी पुनर्जीवित करती है। नदियां, तालाब, झीलें और बांध वर्षा के जल से भरते हैं। साथ ही, वर्षा का पानी जमीन में समाकर भूजल स्तर को बढ़ाता है, जिससे पीने के पानी और सिंचाई की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। आज जब दुनिया के अनेक हिस्सों में जल संकट गहराता जा रहा है, तब वर्षा जल संचयन का महत्व और भी बढ़ गया है। पर्यावरण की दृष्टि से भी बारिश का विशेष महत्व है। वर्षा वातावरण में मौजूद धूल, धुएं और प्रदूषक तत्वों को साफ कर देती है, जिससे वायु शुद्ध और ताजी हो जाती है। बारिश के बाद धरती हरियाली से भर उठती है और प्रकृति का सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। वन्य जीवों और पक्षियों के लिए भी वर्षा जीवनदायिनी सिद्ध होती है, क्योंकि इससे उन्हें जल और भोजन के पर्याप्त स्रोत प्राप्त होते हैं। बारिश का सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्व भी कम नहीं है। कवियों और साहित्यकारों ने सदियों से वर्षा ऋतु की सुंदरता का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। भीगी मिट्टी की सुगंध, बादलों की गर्जना और बूंदों की रिमझिम लोगों के मन में आनंद और उत्साह भर देती है। बच्चे वर्षा में खेलना, कागज की नाव चलाना और प्रकृति के मनोरम दृश्यों का आनंद लेना पसंद करते हैं। हालांकि, जलवायु परिवर्तन के कारण आज वर्षा के स्वरूप में बदलाव देखने को मिल रहा है। कहीं अत्यधिक बारिश हो रही है तो कहीं लंबे समय तक सूखा पड़ रहा है। यह स्थिति कृषि, पर्यावरण और मानव जीवन के लिए चिंता का विषय है। इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण और जल संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक होना होगा। वर्षा जल का संरक्षण समय की आवश्यकता है। यदि हम वर्षा जल संचयन प्रणालियों को अपनाएं, तो भविष्य में जल संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है। घरों, विद्यालयों और सार्वजनिक संस्थानों में वर्षा जल संग्रहण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जल की प्रत्येक बूंद अमूल्य है और उसका संरक्षण हम सभी का कर्तव्य है। अंततः, बारिश केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि जीवन, समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक है। यह धरती को हरा-भरा बनाती है, जल स्रोतों को भरती है और समस्त जीव-जंतुओं को जीवन प्रदान करती है। हमें इस अमूल्य उपहार का सम्मान करना चाहिए और इसके संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी प्रकृति के इस अनुपम वरदान का लाभ उठा सकें।

डॉ विजय गर्ग

स्वामी- स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ल द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

यूपी में 47 लाख बिजली उपभोक्ताओं को बड़ा झटका, बिना बताए बढ़ा दिया गया लोड

लखनऊ(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में पॉवर कॉर्पोरेशन की ओर से बिना सूचना दिए लगभग 47 लाख बिजली उपभोक्ताओं का स्वीकृत भार बढ़ा देने से करीब 25 फीसदी गरीब उपभोक्ता सब्सिडी योजना से बाहर हो गए हैं। राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद ने इस पर आपत्ति जताई है। पूरे मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। बढ़ाए गए भार वाले उपभोक्ताओं में करीब 50 फीसदी स्मार्ट मीटर धारक हैं। इनमें से करीब 25 फीसदी ऐसे उपभोक्ता हैं जिन्हें रियायती दरों पर बिजली मिलती थी। लेकिन भार बढ़ा देने से इन गरीब उपभोक्ताओं को मिलने वाली सब्सिडी स्वतः समाप्त हो गई है। ऐसे में ग्रामीण इलाके के गरीबी रेखा के नीचे वाले उपभोक्ताओं पर प्रतिमाह औसतन 165 रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। वहीं, शहरी गरीब उपभोक्ताओं को प्रतिमाह लगभग 435 रुपये अधिक चुकाने होंगे। राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष अवधेश कुमार वर्मा ने कहा कि यह कदम विद्युत नियामक आयोग के टैरिफ आदेश के विपरीत है। टैरिफ आदेश में साफ है कि उपभोक्ताओं का तीन माह तक अधिक भार होने पर उसे सूचना दी जाएगी। इसके बाद उपभोक्ताओं को संदेश भेजकर यह बताना होगा कि उन्होंने वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान अपने स्वीकृत लोड से अधिक भार का उपयोग किया। ऐसे में स्वीकृत लोड एक किलोवाट को बढ़ाकर दो किलोवाट किया जा रहा है। बिना सूचना दिए स्वीकृत भार बढ़ाना प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के विरुद्ध है। वर्मा ने राज्य सरकार से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। उन्होंने भविष्य में टैरिफ आदेश और नियामकीय प्रावधानों का पूर्णतः पालन सुनिश्चित करने की भी मांग।

स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं पर दोहरी मार वर्मा ने बताया कि केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने लोकसभा में लिखित जवाब दिया कि स्मार्ट मीटर लगने के बाद विद्युत उपभोक्ताओं से अधिकतम मांग जुर्माना नहीं वसूला जाएगा। इसके बाद भी प्रदेश में यह वसूला जा रहा है। जुर्माना लेने के साथ ही उनका स्वीकृत भार भी बढ़ाया जा रहा है। ऐसे में स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं पर दोहरी मार पड़ रही है।प्रदेश में करीब 1.70 लाख बीपीएल उपभोक्ता हैं। एक किलोवाट पर 50 रुपया फिक्स्ड चार्ज है। इन्हें करीब 300 रुपये का भुगतान करना होता है। अब जिन उपभोक्ताओं का भार बढ़ाकर दो किलोवाट कर दिया गया है तो उनका 180 रुपया फिक्स्ड चार्ज के साथ अधिक ऊर्जा शुल्क देना पड़ेगा। ऐसे में ग्रामीण उपभोक्ता को करीब 165 प्रतिमाह का अतिरिक्त आर्थिक भार पड़ेगा।

सराय नदी किनारे रिवर फ्रंट पार्क बनाने की उठायी मांग

हरिओम राजेंद्र बोले यह सिर्फ पार्क नहीं, शहर की नई पहचान बनेगा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। शहर के बीचों-बीच बहने वाली सराय नदी के किनारे कैंची पुल से लेकर उजागर लाल इंटर कॉलेज स्थित पक्का पुल तक फैले वन क्षेत्र को 'सराय रिवर फ्रंट एवं पार्क' के रूप में विकसित किए, जाने की मांग जोर पकड़ने लगी है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों को लगातार उठाने वाले लोक निर्माण संघ के संस्थापक हरिओम मिश्रा 'राजेंद्र' ने इस संबंध में एक विस्तृत प्रस्ताव रखते हुए कहा है कि यदि इस क्षेत्र को सुनियोजित ढंग से विकसित किया जाए तो यह न केवल शहर की सुंदरता बढ़ाएगा, बल्कि हजारों लोगों के स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक जीवन के लिए भी वरदान साबित होगा। हरिओम राजेंद्र का कहना है कि वर्तमान में सुबह और शाम बड़ी संख्या में बुजुर्ग, युवा और महिलाएं टहलने के लिए कैंची पुल तक पहुंचते हैं। लेकिन वहां बैठने, विश्राम करने या सुरक्षित भ्रमण के लिए कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। यदि नदी किनारे हरियाली को संरक्षित रखते हुए वॉकिंग ट्रैक, ओपन जिम, बैठने की व्यवस्था, बच्चों के खेलने का क्षेत्र और आकर्षक रिवर फ्रंट विकसित किया जाए, तो यह स्थान शहरवासियों के लिए स्वास्थ्य और सुकून का केंद्र बन सकता है। उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में बुजुर्गों को स्वच्छ वातावरण और नियमित सैर की सबसे अधिक आवश्यकता है। दूसरी ओर मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में उलझी युवा पीढ़ी को प्रकृति से जोड़ने के लिए ऐसे सार्वजनिक स्थलों का विकास बेहद जरूरी है। बच्चों को भी खुला और सुरक्षित वातावरण मिलेगा, जहां वे खेल सकेंगे और प्रकृति के बीच समय बिता सकेंगे। हरिओम राजेंद्र ने कहा कि यह परियोजना केवल सौंदर्यीकरण तक सीमित नहीं होगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, पर्यटन, सामाजिक सहभागिता और जनस्वास्थ्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगी। उनका मानना है कि यदि शासन-प्रशासन इस प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार करे तो यह स्थल प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत' की परिकल्पना के अनुरूप सीतापुर की पहचान बन सकता है। उन्होंने जनप्रतिनिधियों और प्रशासन से इस महत्वाकांक्षी परियोजना को प्राथमिकता देने की अपील करते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, सुंदर और हरित शहर देना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि यह सपना साकार होता है तो सराय नदी का यह किनारा केवल एक पार्क नहीं, बल्कि सीतापुर की नई पहचान और लोगों के जीवन में नई ऊर्जा का केंद्र बनेगा।

धूमधाम से सम्पन्न हुआ विदाई समारोह, कौशलेन्द्र सिंह बने मिस्टर फेयरवेल व यासमीन बानो बनीं मिस फेयरवेल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

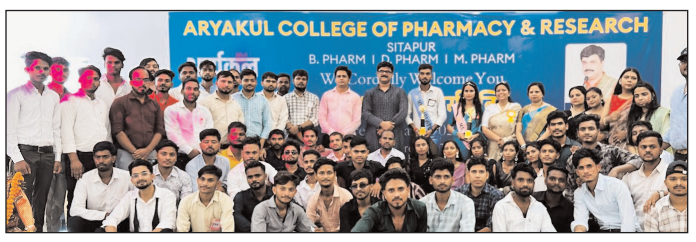

सीतापुर। आर्य इति 2025-26 के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के सम्मान में भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, मनोरंजक गतिविधियों एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं ने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम के दौरान मिस्टर फेयरवेल का खिताब कौशलेन्द्र सिंह तथा मिस फेयरवेल का खिताब यासमीन बानो को प्रदान किया गया। विजेताओं को स्मृति चिन्ह एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के प्रबन्ध निदेशक डॉ. सशक्त सिंह ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें जीवन में निरंतर आगे बढ़ने और संस्थान का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। प्राचार्या डॉ. स्तुति वर्मा ने विद्यार्थियों को उनके भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं। डीन अकादमिक श्रीमती रुचि सिंह, उपनिदेशक डॉ. आदित्य सिंह तथा डॉ. अब्दुल रब खान ने भी विद्यार्थियों को सफलता के लिए प्रेरणादायक संदेश दिए। समारोह में रजिस्ट्रार रोहित सिंह, अध्यापक राजीव कुमार, ऋषभ शुक्ल, तबस्सुम बानो, अनुभा धुरिया, तान्या, मोहित यादव, रेहान, साहिल सिंह तथा स्टाफ सदस्य अरुण सिंह, प्रवीण यादव, प्रीति यादव, प्रीति तिवारी, अबरार अली, तिलक राज, रमा सिंह, आदर्श सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन वरिष्ठ विद्यार्थियों की भावुक विदाई, स्मृति-चिन्ह वितरण एवं समूह छायाचित्र के साथ हुआ। पूरे समारोह में उत्साह, उल्लास और भावनात्मक वातावरण देखने को मिला।

यूपी की कानून-व्यवस्था पर उठाए सवाल, युवाओं और बहुजन समाज के मुद्दों को लेकर सरकार को घेरा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में भीम आर्मी भारत एकता मिशन द्वारा शनिवार को राजधानी लखनऊ में एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए भीम आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनय रतन सिंह ने उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा कि प्रदेश में अपराध और अत्याचार की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं तथा सरकार हर मोर्चे पर विफल साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि दलित, आदिवासी, पिछड़े वर्ग, अल्पसंख्यकों और महिलाओं के खिलाफ हो रहे अपराधों पर प्रभावी कार्रवाई नहीं हो रही है। एससी/एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम का सख्ती से पालन कराया जाए और पीड़ितों को समय पर न्याय एवं सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए। विनय रतन सिंह ने युवाओं के भविष्य को लेकर भी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदेश में लंबित सरकारी भर्तियों को शीघ्र पूरा किया जाए तथा भर्ती परीक्षाओं में पूरी पारदर्शिता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने, सरकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों और छात्रावासों में आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा प्रतियोगी छात्रों के लिए सुरक्षित माहौल बनाने की मांग की। उन्होंने कहा कि कोचिंग संस्थानों और सार्वजनिक भवनों का नियमित सुरक्षा एवं फायर ऑडिट कराया जाए, ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचा जा सके। साथ ही प्रदेश में कानून-व्यवस्था को और मजबूत कर प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। प्रेस वार्ता में बिजली, पानी, स्वास्थ्य, सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं में सुधार, युवाओं के लिए रोजगार एवं कौशल विकास के अवसर बढ़ाने तथा संविधान की मूल भावना–समानता, न्याय, स्वतंत्रता और बंधुत्व–के अनुरूप शासन व्यवस्था लागू करने की भी मांग की गई। भीम आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि उनकी मांगें किसी राजनीतिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि प्रदेश के युवाओं, बहुजन समाज और आम नागरिकों के हित में उठाई जा रही हैं। उन्होंने सरकार से जनहित के इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार कर आवश्यक कदम उठाने की अपील की।

कोठार में सुरक्षित है रामचरितमानस की स्वर्णयुक्त प्रति

अयोध्या(एजेंसी)। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने स्पष्ट किया है कि लगभग दो वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी लक्ष्मीनारायण की ओर से भेंट की गई सोने से युक्त श्रीरामचरितमानस सुरक्षित है। पूर्व आईएएस ने शनिवार को सोशल मीडिया पर एक इंटरव्यू में आशंका जताई थी कि करीब 5 करोड़ की लागत से निर्मित सोने की रामायण जो उन्होंने राम मंदिर ट्रस्ट को भेंट की थी, वह भी चोरी हो गई है। इसके बाद रविवार को राम मंदिर निर्माण सहायक गोपाल राव ने जानकारी दी कि दानदाता की इच्छा के अनुरूप इसे पहले श्रीरामलला के गर्भगृह के सामने सम्मानपूर्वक रखा गया था। इसके बाद निर्धारित व्यवस्था के तहत रामचरितमानस को मंदिर के गूढ़ मंडप स्थित आभूषण कोठरी में सुरक्षित रख दिया गया। यह भेंट मंदिर के दान रजिस्टर में उसी समय दर्ज की गई थी। कहा कि श्री लक्ष्मीनारायण जब भी चाहें मंदिर आकर अपनी भेंट को देख सकते हैं। रामचरितमानस पूरी तरह सुरक्षित है और उसके संबंध में किसी प्रकार की आशंका की आवश्यकता नहीं है। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की सोमवार को होने वाली महत्वपूर्ण बैठक से एक दिन पहले अयोध्या में पूरे दिन हलचल बनी रही। मठ-मंदिरों, संतों के आश्रमों, ट्रस्ट से जुड़े लोगों और रामभक्तों के बीच बैठक को लेकर चर्चाओं का दौर चलता रहा। राम मंदिर दान प्रकरण और एसआईटी जांच के बीच होने जा रही इस बैठक पर सभी की निगाहें टिकी हैं। बैठक से ठीक एक दिन पहले ट्रस्ट के ट्रस्टी महंत दिनेंद्र दास अचानक अयोध्या से बाहर चले गए। महंत दिनेंद्र दास ने बताया कि वे बैठक का हिस्सा बनेंगे, जरूरत पड़ी तो ऑनलाइन बैठक से जुड़ेंगे। वहीं बैठक में भाग लेने के लिए ट्रस्टी युगपुरुष परमानंद और जगद्गुरु वासुदेवानंद सरस्वती अयोध्या पहुंच चुके हैं। ट्रस्ट के सदस्य डॉ. कृष्ण मोहन पहले से ही अयोध्या में मौजूद हैं। वहीं राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय के समर्थन में लामबंदी भी तेज हो गई है। रविवार को राम कचहरी मंदिर में संत समाज ने प्रेस वार्ता कर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय के समर्थन में खुलकर आवाज उठाई। संतों ने कहा कि एसआईटी की जांच पूरी होने से पहले किसी भी व्यक्ति को दोषी ठहराना न्यायोचित नहीं है।

संक्षिप्त खबरें

फंदे पर डॉक्टर, पास मिली युवती की लाश

सहारनपुर। सहारनपुर के सदर बाजार थाना क्षेत्र में किराए के कमरे से डॉक्टर और युवती के शव मिलने से सनसनी फैल गई. पुलिस के अनुसार कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था. डॉक्टर का शव खिड़की से लटका मिला, जबकि युवती की लाश कमरे में पड़ी थी। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में एक सनसनीखेज मामला सामने आया है. थाना सदर बाजार क्षेत्र स्थित एसबीआई कॉलोनी के तिरंगा चौक के पास बुधवार देर रात एक किराए के कमरे से डॉक्टर और एक युवती के शव मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया. घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और कमरे का दरवाजा तोड़कर दोनों शवों को बाहर निकाला। मृतकों की पहचान केरल निवासी 39 वर्षीय सैम कमनीश और सहारनपुर के गागलहेड़ी क्षेत्र की रहने वाली 24 वर्षीय आस्था के रूप में हुई है। दोनों मृतकों के मोबाइल फोन, कॉल डिटेल और आपसी संपर्क की जानकारी जुटाई जा रही है।

सुल्तानपुर: हाईटेंशन लाइन टूटने से दो की मौत, जेई निलंबित

सुल्तानपुर। जिले के लंभुआ तहसील क्षेत्र के शंभूगंज बाजार में हाईटेंशन बिजली लाइन का जर्जर तार टूटने से दो लोगों की करंट लगने से मौत हो गई। घटना के बाद बिजली विभाग ने संबंधित अवर अभियंता (जेई) को निलंबित कर विभागीय जांच के आदेश दिए हैं। जानकारी के अनुसार, बाजार में सड़क किनारे सब्जी बेच रहे सकवा गांव निवासी राधेश्याम यादव और गुरु प्रसाद गुप्ता अचानक टूटकर गिरे हाईटेंशन तार की चपेट में आ गए। दोनों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। ग्रामीणों का आरोप है कि जर्जर बिजली तार को बदलने के लिए कई बार शिकायत की गई थी, लेकिन विभाग ने समय रहते कोई कार्रवाई नहीं की। घटना के बाद क्षेत्र में आक्रोश व्याप्त है। विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियंता वी.के. जैन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए संबंधित जेई को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। साथ ही पूरे प्रकरण की जांच के लिए विभागीय समिति गठित की गई है।

उत्तर प्रदेश आम महोत्सव-2026 का हुआ शानदार समापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

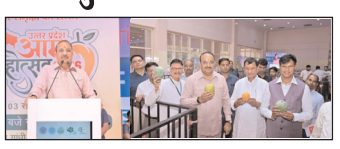

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान, गोमती नगर, लखनऊ में चल रहे तीन दिवसीय 'उत्तर प्रदेश आम महोत्सव-2026' का रविवार को समापन हो गया। समापन दिवस पर मुख्य अतिथि प्रदेश के उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने 180 से अधिक विजेताओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। समापन दिवस पर उद्यान मंत्री ने आम की विभिन्न प्रजातियों की 07 श्रेणियों में एवं 56 वर्गों की प्रतियोगिता में 51 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कुल 147 पुरस्कार प्रदान किए। आम आधारित संरक्षित उत्पादों की प्रतियोगिता के 11 वर्गों के 19 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कुल 33 पुरस्कार तथा आम पकवान की प्रतियोगिता के 3 विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कुल 3 पुरस्कार दिए गए। आम के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्श का पुरस्कार मोहम्मद इकबाल अहमद, प्रो. मेसर्स अवध नर्सरी, मलिहाबाद, लखनऊ को चौंसा प्रजाति के प्रदर्शन के लिए दिया गया। सर्वाधिक पुरस्कार विजेताओं में 20 पुरस्कार मोहम्मद इकबाल अहमद को, 17 पुरस्कार मोहम्मद अब्दुल सलीम, जैद नर्सरी, मलिहाबाद को तथा 14 पुरस्कार सुरेश चंद्र शुक्ला, गोमती नगर, लखनऊ को प्राप्त हुए। प्रदर्शनी में सर्वाधिक 190 प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु सुरेश चंद्र शुक्ला को प्रथम, 92 प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु उपेन्द्र सिंह, अवध आम उत्पादक सहकारी संघ, माल, लखनऊ को द्वितीय तथा 24 प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु सूर्य मणि यादव, जौनपुर को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। 08 वर्ष से 12 वर्ष के बच्चों की आम खाने की प्रतियोगिता में रुचिर शुक्ला पुत्र कर्नल रिषभी शुक्ला, लखनऊ को प्रथम, अरिक्ता सिंह पुत्री डॉ. धीरेन्द्र सिंह, लखनऊ को द्वितीय तथा दीपांशु यादव पुत्र रमेश कुमार यादव, बस्ती को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

उत्तर प्रदेश जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति का प्रथम स्थापना दिवस संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में उत्तर प्रदेश जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति का प्रथम स्थापना दिवस शनिवार को लखनऊ में अत्यंत गरिमामय, भव्य एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में यह स्पष्ट संदेश गया कि संगठित पत्रकारिता ही लोकतंत्र की रीढ़ है। समारोह में पत्रकारिता, सामाजिक, धार्मिक एवं विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अनेक गणमान्यजनों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। राष्ट्रीय अध्यक्ष बृजमोहन सिंह का ओजस्वी संबोधन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय जन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बृजमोहन सिंह ने अपने संबोधन में कहा: 'सम्मानित मंच, अध्यक्ष हरीश तिवारी, संयोजक राजेंद्र गुप्ता, महासचिव आशीष तिवारी और उत्तर प्रदेश के कोने-कोने से आए पत्रकारिता के सच्चे सिपाही साथियों, आप सभी को मेरा क्रांतिकारी नमस्कार। आज मुझे बेहद गर्व हो रहा है कि 'जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति' अपना पहला स्थापना दिवस मना रही है। साथियों, कलम और संविधान एक ही स्याही से चलते हैं। जिस दिन पत्रकार डर जाएगा, उस दिन लोकतंत्र भी डर जाएगा। जिस दिन पत्रकार बिक जाएगा, उस दिन सरकार भी बिक जाएगी। मैं एक राजनीतिक दल का अध्यक्ष हूँ। रोज मेरी आलोचना भी होती है और तारीफ भी। लेकिन मैंने कभी किसी पत्रकार से ये नहीं कहा कि 'मेरे खिलाफ मत लिखो'। क्योंकि मैं जानता हूँ - आईना टूट सकता है, लेकिन सच नहीं टूटता।आज पत्रकार साथी सबसे ज्यादा परेशान हैं। मान्यता के नाम पर लटकाया जाता है, विज्ञापन के नाम पर दबाया जाता है, और सच लिखने पर धमकाया जाता है। भारतीय जन समाज पार्टी का वादा है। हम पत्रकारों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं। अंत में समिति के सभी पदाधिकारियों को दिल से बधाई। आपका पहला साल नींव का साल है, अगला साल इंकलाब का साल होगा।जय हिंद, जय संविधान, जय पत्रकारिता। धन्यवाद।' कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समिति के अध्यक्ष हरीश तिवारी ने कहा कि 'उत्तर प्रदेश जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार समिति पत्रकारों के अधिकार, सम्मान, सुरक्षा और स्वाभिमान के लिए निरंतर संघर्ष करती रहेगी। हम संगठन को प्रदेश का सबसे मजबूत पत्रकार संगठन बनाएंगे।' समिति के महासचिव आशीष तिवारी ने प्रभावशाली मंच संचालन किया। वहीं कार्यक्रम के संयोजक राजेंद्र गुप्ता ने सभी अतिथियों का स्वागत कर उन्हें स्मृति चिन्ह व अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के दौरान समिति के पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष बृजमोहन सिंह को माला पहनाकर, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर ब्छ्रस्कके बांदा जिला अध्यक्ष राजेश कुमार यादव भी राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने पत्रकारों के सम्मान और लोकतंत्र को मजबूत करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते भारतीय जन समाज पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष बृजमोहन सिंह समिति के पदाधिकारियों द्वारा अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित करते हुए स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

बिराहिमपुर ग्राम पंचायत की त्रिनेत्र योजना में भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

शिकायतों और खबर प्रकाशित होने के बाद भी कार्रवाई नहीं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद, लखनऊ। मलिहाबाद विकासखंड की ग्राम पंचायत बिराहिमपुर के मजरा रामपुर बस्ती में सरकार की महत्वाकांक्षी त्रिनेत्र योजना को लेकर गंभीर अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के आरोप सामने आए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि तत्कालीन ग्राम प्रधान राम शंकर कश्यप ने ब्लॉक स्तर के कर्मचारियों की कथित मिलीभगत से योजना में बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितता करते हुए सरकारी धन का दुरुपयोग किया। वहीं ग्राम पंचायत सचिव पर भी इस योजना में प्रधान के साथ मिलीभगत कर सरकारी धन हड़पने का आरोप है ग्रामीणों का कहना है कि इस पूरे मामले की शिकायत संबंधित अधिकारियों से की गई और समाचार भी प्रकाशित हुआ, लेकिन आज तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई। ग्रामीणों के अनुसार, त्रिनेत्र योजना के तहत गांव में 16 ष्टष्टञ्जङ्क कैमरे लगाए गए। आरोप है कि इन कैमरों की खरीद और स्थापना के नाम पर करीब 2 लाख रुपये का भुगतान दिखाया गया, जबकि ग्रामीणों का दावा है कि बाजार में इन कैमरों की वास्तविक कीमत लगभग 35 से 40 हजार रुपये के बीच है। ऐसे में ग्रामीणों ने सरकारी धन के कथित दुरुपयोग की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

महिलाओं की निजता पर सबसे बड़ा सवाल

ग्रामीणों का सबसे गंभीर आरोप यह है कि CCTV कैमरों का उपयोग गांव की सुरक्षा के बजाय महिलाओं और युवतियों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए किया जा रहा है। उनका कहना है कि प्रतिदिन रात के समय प्रधान के कुछ करीबी लोग CCTV की रिकॉर्डिंग देखते हैं, जबकि ऐसा कार्य केवल अधिकृत सरकारी अधिकारियों द्वारा ही किया जाना चाहिए। यदि जांच में यह आरोप सही पाए जाते हैं, तो यह महिलाओं की निजता, सम्मान और उनके मौलिक अधिकारों से जुड़ा अत्यंत गंभीर मामला होगा। ग्रामीणों का कहना है कि इस पूरे मामले की शिकायत संबंधित विभाग के अधिकारियों से कई बार की गई और खबरें भी प्रकाशित हुईं, लेकिन आज तक किसी भी स्तर पर जांच शुरू नहीं की गई। उनका आरोप है कि ग्राम प्रधान का कार्यकाल समाप्त हो जाने के कारण अधिकारी अब कार्रवाई से बच रहे हैं। ग्रामीणों ने प्रशासन से सवाल किया है कि क्या किसी ग्राम प्रधान, नेता या जनप्रतिनिधि का कार्यकाल समाप्त हो जाने के बाद उसके कार्यकाल में हुए कथित भ्रष्टाचार की जांच नहीं होगी? क्या सरकारी धन के दुरुपयोग के आरोप केवल समय बीत जाने से समाप्त हो जाते हैं, या फिर दोषियों के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी? ग्रामीणों ने मांग की है कि त्रिनेत्र योजना के पूरे खर्च का तकनीकी एवं वित्तीय ऑडिट कराया जाए, CCTV कैमरों की खरीद से जुड़े सभी अभिलेखों की जांच की जाए, रिकॉर्डिंग तक किस-किस की पहुंच रही इसकी भी जांच हो और यदि किसी भी स्तर पर वित्तीय अनियमितता या नियमों के उल्लंघन की पुष्टि होती है, तो दोषियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। अब पूरा मामला प्रशासन की निष्पक्ष जांच और कार्रवाई पर टिका है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि इस मामले में भी कार्रवाई नहीं हुई, तो सरकार की योजनाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े होंगे।

पीएम सूर्य घर योजना के बारे में दी जानकारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। संविदा कर्मी परिजन सेवा संस्थान द्वारा गत दिवस बिसवां तहसील के गांव बुढ़नापुर (भिठमनी) में पी0एम0 सूर्य घर योजना अंतर्गत जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मोहसिन अंसारी ने किया ।मुख्य अतिथि कौशल कुमार ने उपस्थित दर्जनों ग्रामीणों को प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने योजना ग्रामीणों को योजना के लाभ, उसकी पात्रता, आवेदन करने की प्रक्रिया और सोलर रूफटॉप स्थापना सम्बन्धी जानकारी दी साथ ही उपस्थित लोगों के प्रश्नों के उत्तर दिये गये और उनका समाधान प्रक्रिया भी समझायी गयी। अंत में व्यवस्थापक मो0 जुबेर ने सभी उपस्थित लोगों को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया गया। इस दौरान वारिस अली, आशीष यादव, राकेश कुमार, मो0 जावेद,जसीम, करीमुल्ला, कौशल कुमार , मोहर्रम अली, इस्लाम खां,मो0 जुबेर खां,मो0 फैसला, आर्यन वर्मा, अबू सहमा खां, छोटे व दीपक यादव सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

इस्लामाबाद बन सकता है अमेरिका ईरान वार्ता का अगला मेजबान

समाचार पत्र 'डॉन' ने राजनयिक सूत्रों के हवाले से बताया कि वार्ता फिर शुरू करना कूटनीतिक प्रक्रिया को पटरी पर बनाए रखने और अमेरिका एवं ईरान के बीच लंबे समय से जारी विवादों को सुलझाने के प्रयासों का हिस्सा है तकनीकी वार्ता 11 जुलाई को होने की संभावना है, लेकिन इसके स्थल को लेकर अंतिम फैसले के बारे में अभी घोषणा नहीं की गई है। ईरान के दिवंगत सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के कई दिन तक चलने वाले राजकीय अंतिम संस्कार से जुड़े कार्यक्रमों के कारण वार्ता अस्थायी रूप से टाल दी गई है ईरानी अधिकारियों ने संकेत दिया है कि पक्ष विदेशों में 'फ्रीज' अरबों डॉलर की ईरानी संपत्तियों में से कुछ राशि जारी करने को लेकर सहमति पर पहुंच गए हैं। अमेरिकी अधिकारियों ने इस बात से कथित तौर पर इनकार किया कि ऐसा कोई समझौता हुआ है।

इस्लामाबाद(एजेंसी)। अमेरिका और ईरान के बीच अगले दौर की तकनीकी वार्ता के आयोजन स्थल के रूप में पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद प्रमुख विकल्प बनकर उभरी है। अमेरिका और ईरान ने पश्चिम एशिया में शांति बहाल करने के उद्देश्य से 18 जून को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे। इसके बाद पाकिस्तान और कतर की मध्यस्थता में 21 जून को स्विट्जरलैंड में तकनीकी स्तर की वार्ता हुई थी। समाचार पत्र 'डॉन' ने राजनयिक सूत्रों के हवाले से बताया कि वार्ता फिर शुरू करना कूटनीतिक प्रक्रिया को पटरी पर बनाए रखने और अमेरिका एवं ईरान के बीच लंबे समय से जारी विवादों को सुलझाने के प्रयासों का हिस्सा है तकनीकी वार्ता 11 जुलाई को होने की संभावना है, लेकिन इसके स्थल को लेकर अंतिम फैसले के बारे में अभी घोषणा नहीं की गई है। ईरान के दिवंगत सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के कई दिन तक चलने वाले राजकीय अंतिम संस्कार से जुड़े कार्यक्रमों के कारण वार्ता अस्थायी रूप से टाल दी गई है ईरानी अधिकारियों ने संकेत दिया है कि अंतिम संस्कार से जुड़े कार्यक्रमों के पूरा होने के बाद तेहरान के प्रतिनिधिमंडल की संरचना की घोषणा की जाएगी। पिछले तीन दशकों से ईरान पर शासन करने वाले खामेनेई तेहरान पर बड़े पैमाने पर किए गए अमेरिका एवं इजराइल के संयुक्त हवाई हमलों के पहले दिन 28 फरवरी को मारे गए थे। सूत्रों के हवाले से बताया कि वार्ता में ईरान के परमाणु कार्यक्रम, प्रतिबंधों में राहत और विदेशों में 'फ्रीज' की गई ईरानी संपत्तियों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। बातचीत में क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा होने की संभावना है। ग्यारह जुलाई की बैठक का उद्देश्य दो सप्ताह पहले हस्ताक्षरित 'इस्लामाबाद समझौता ज्ञापन' के तहत निर्धारित रूपरेखा को आगे बढ़ाना है। इस समझौता ज्ञापन में दोनों पक्षों को ईरान के परमाणु कार्यक्रम और उससे संबंधित मुद्दों पर व्यापक समझौता करने के लिए 60 दिन का समय दिया गया है। इससे पहले इस सप्ताह की शुरुआत में अप्रत्यक्ष तकनीकी वार्ता हुई थी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उस वार्ता को ' 'बहुत अच्छी'' बताया था।ईरानी अधिकारियों ने कहा था कि दोनों

यमन के पास लाल सागर में मालवाहक जहाज पर हमला

काहिरा(एजेंसी)। यमन के तट के पास लाल सागर में रविवार को एक मालवाहक जहाज पर हमला हुआ। ब्रिटेन की समुद्री सुरक्षा एजेंसी यूनाइटेड किंगडम मैरीटाइम ट्रेड ऑपरेशंस (यूकेएमटीओ) ने बताया कि जहाज ने अज्ञात हथियारबंद हमलावरों द्वारा हमले की सूचना दी है। घटना की जांच की जा रही है। यूकेएमटीओ के अनुसार हमला यमन के पश्चिमी तटीय शहर होदेदा से करीब 30 समुद्री मील (55 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में हुआ। होदेदा शहर ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों के नियंत्रण में है। एजेंसी ने बताया कि जहाज से सूचना मिली कि उस पर अज्ञात हथियारबंद लोगों ने हमला किया है।

हालांकि, अभी तक किसी भी संगठन ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली थी।हाल के दिनों में हूती विद्रोहियों ने फिर से लाल सागर से गुजरने वाले जहाजों पर हमले शुरू करने की धमकी दी थी, लेकिन अब तक उन्होंने कोई नया हमला नहीं किया था। इस घटना पर हूती संगठन की ओर से भी तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।इससे पहले गाजा युद्ध के दौरान हूती विद्रोहियों ने अपने नियंत्रण वाले इलाकों के पास से गुजरने वाले कई जहाजों पर ड्रोन और मिसाइलों से हमले किए थे। इन हमलों के कारण कई अंतरराष्ट्रीय शिपिंग कंपनियों ने लाल सागर और स्वेज नहर के रास्ते की बजाय अफ्रीका के दक्षिणी सिरे से लंबा समुद्री मार्ग अपनाना शुरू कर दिया था।लाल सागर और अदन की खाड़ी में इन दिनों सोमाली समुद्री लुटेरों की गतिविधियां भी बढ़ी हैं। 1 जुलाई को दक्षिण-पूर्वी यमन के बलहाफ बंदरगाह से करीब 76 समुद्री मील (140 किलोमीटर) दूर एक जहाज पर संदिग्ध समुद्री लुटेरों ने हमला किया था।यूकेएमटीओ के अनुसार, उस घटना में एक छोटी नाव पर सवार चार हथियारबंद लोगों ने जहाज के ब्रिज को मामूली नुकसान पहुंचाया था। विशेषज्ञों का मानना है कि लाल सागर और अदन की खाड़ी में बढ़ते सुरक्षा खतरे अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं।

फ्रांस विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंचा

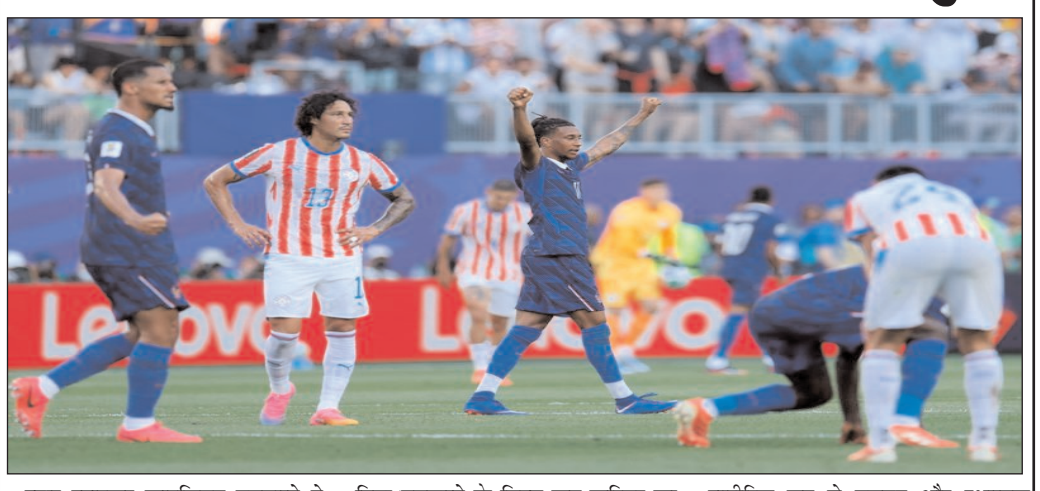

स्टार स्ट्राइकर काइलियन एमबाप्पे ने अपने पांव का जादू दिखाते हुए पेनल्टी को गोल में बदला जिससे फ्रांस ने पराग्वे को 1-0 से पराजित करके विश्व कप फुटबॉल के क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। पराग्वे के खिलाड़ियों ने एमबाप्पे को खुलकर खेलने से रोके रखा और इस बीच उन्हें भड़काने की भी कोशिश की। यह दिग्गज खिलाड़ी हालांकि शांत बना रहा और इस बीच मुस्कुरा कर खेल का पूरा आनंद भी लेता रहा। यही वजह थी कि जब फ्रांस को 70वें मिनट में पेनल्टी मिली तो उन्होंने बड़ी सहजता से पराग्वे के गोलकीपर ऑरलैंडो गिल को छकाकर उस पर गोल कर दिया।एमबाप्पे के विश्व कप करियर का यह 19वां गोल था जो आखिर में निर्णायक साबित हुआ। एमबाप्पे ने बाद में कहा, ' 'हम जानते थे कि इस मैच में क्या होने वाला है। हम भी आक्रामक हो सकते थे लेकिन हम जानते हैं कि कैसे खेलना है। हमें पता है कि आक्रामक फुटबॉल कैसे खेलते हैं। शायद वे सोच रहे थे कि हम सूट-बूट में आएंगे, लेकिन हम तैयार थे।'' फ्रांस क्वार्टर फाइनल में बृहस्पतिवार को मैसाचुसेट्स के फॉक्सबोरो में मोरक्को का सामना करेगा। पूरे मैच के दौरान भीषण गर्मी की चेतावनी जारी रही क्योंकि तापमान 100 डिग्री फ़ारेनहाइट आसपास बना रहा। ऐसे में एमबाप्पे ने शारीरिक रूप से मजबूत और रक्षात्मक मानसिकता वाली पराग्वे की टीम के खिलाफ मिले सबसे बढ़िया मौके को भुनाने में कोई गलती नहीं की। फ्रांस को यह पेनल्टी तब मिली जब वीडियो रिव्यू के बाद डिएगो गोमेज़ को ट्रिपिंग का दोषी पाया गया। एमबाप्पे सभी विश्व कप में कुल मिलाकर सर्वाधिक गोल करने के मामले में अर्जेंटीना के लियोनेल मेस्सी के करियर रिकॉर्ड से सिर्फ एक गोल पीछे हैं। इस टूर्नामेंट में एमबाप्पे और मेस्सी दोनों के सात-सात गोल हैं और वे 'गोल्डन बूट' की दौड़ में शीर्ष पर हैं। एमबाप्पे ने पिछले विश्व कप में यह पुरस्कार जीता था लेकिन तब उनकी टीम फाइनल में अर्जेंटीना से हार गई थी।

कॉन्सर्ट में कैटी पेरी का अनोखा अंदाज

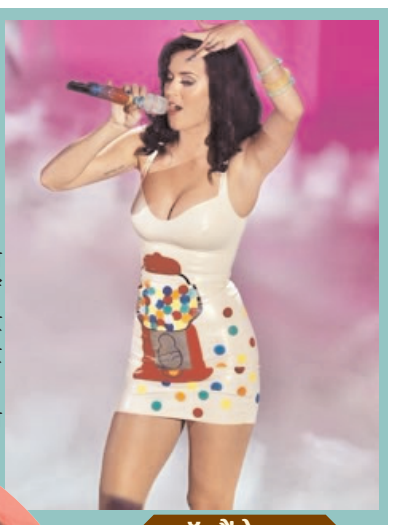

हॉलीवुड की मशहूर गायिका और गीतकार कैटी पेरी एक बार फिर सुर्खियों में हैं। इस बार चर्चा उनकी नई परफॉर्मेंस को लेकर हो रही है, जिसे कई लोग उनके पूर्व मंगेतर ऑरलैंडो ब्लूम पर किया गया एक तंज मान रहे हैं। यह मामला स्पेन के सैंटियागो डी कॉम्पोस्टेला में आयोजित प्रसिद्ध 'ओ सोन डो कैमिनो' का है। कैटी पेरी यहां मुख्य कलाकार के रूप में प्रस्तुति दे रही थीं। अपने 2020 के हिट गाने 'नेवर रियली ओवर' की परफॉर्मेंस के दौरान मंच पर एक विशाल आईफोन ग्राफिक दिखाया गया, जिसने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा। इस ग्राफिक में कैटी पेरी के कई कथित रिश्तों से जुड़े लोगों के नाम या उनके शुरुआती अक्षर दिखाई दिए। इनमें डीजे डिप्लो, संगीतकार जॉन मेयर के शुरुआती अक्षर, पूर्व पति रसेल ब्रांड और ऑरलैंडो ब्लूम का नाम शामिल था। स्क्रीन पर ऐसा दिखाया गया मानो इन सभी की कॉल कैटी पेरी को आ रही हो। दिलचस्प बात यह रही कि कैटी ने इन सभी कॉल्स को नजरअंदाज कर दिया। बाद में उन्होंने एक कॉल रिसीव की, जिस पर 'जेपीजेटी' लिखा हुआ था। इसे कई लोगों ने जस्टिन ट्रूडो के पूरे नाम 'जस्टिन पियरे जेम्स ट्रूडो' के शुरुआती अक्षरों से जोड़कर देखा। इस दृश्य ने सोशल मीडिया पर काफी चर्चा बटोरी। कई प्रशंसकों ने इसे कैटी पेरी के पुराने रिश्तों और उनके नए रिश्ते की ओर इशारा करने वाला मजाकिया अंदाज बताया। हालांकि, कैटी पेरी ने मंच से इस बारे में कोई सीधी टिप्पणी नहीं की। कैटी पेरी और ऑरलैंडो ब्लूम पहली बार 2016 में गोल्डन ग्लोब्स की एक आफ्टर पार्टी में मिले थे। 2017 में दोनों कुछ समय के लिए अलग हुए, लेकिन 2018 में फिर साथ आए और 2019 में वैलेंटाइन डे पर सगाई कर ली। अगस्त 2020 में उनकी बेटी डेजी डव का जन्म हुआ। करीब एक दशक तक साथ रहने के बाद जून 2025 में दोनों के अलग होने की खबरें सामने आईं। अलगाव के बावजूद, दोनों अपनी बेटी की संयुक्त रूप से परवरिश कर रहे हैं। ऑरलैंडो ब्लूम को फिल्मों 'द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' में लेगोलास और पाइरेट्स ऑफ द कैरीबीन्स में विल टर्नर के किरदार के लिए जाना जाता है। उनकी पूर्व पत्नी मिरांडा केर से एक बेटा फ्लिन भी है। वहीं, ऑरलैंडो ब्लूम से पहले कैटी पेरी की शादी 2010 से 2012 तक रसेल ब्रांड से रही थी। इसके बाद 2012 से 2015 के बीच उनका जॉन मेयर के साथ भी रिश्ता रहा। पिछले वर्ष डिप्लो ने भी सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया था कि वह और कैटी एक-दूसरे को डेट कर चुके हैं। जुलाई 2025 से कैटी पेरी और जस्टिन ट्रूडो के रिश्ते को लेकर भी लगातार चर्चाएं होती रही हैं, जिसके बाद अब उनकी इस नई स्टेज परफॉर्मेंस ने एक बार फिर लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है।

ऑरलैंडो ब्लूम को फिल्मों 'द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' में लेगोलास और पाइरेट्स ऑफ द कैरीबीन्स में विल टर्नर के किरदार के लिए जाना जाता है। उनकी पूर्व पत्नी मिरांडा केर से एक बेटा फ्लिन भी है। वहीं, ऑरलैंडो ब्लूम से पहले कैटी पेरी की शादी 2010 से 2012 तक रसेल ब्रांड से रही थी।

मूसलाधार बारिश से महाराष्ट्र से कश्मीर तक तबाही

महाराष्ट्र(एजेंसी)। देशभर में सक्रिय दक्षिण-पश्चिम मानसून से भारी बारिश ने महाराष्ट्र, गुजरात समेत कई राज्यों में जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है. मुंबई जैसे बड़े शहरों में जलभराव और बाढ़ से निपटने के लिए हर साल करोड़ों रुपए खर्च किए जाते हैं, इसके बावजूद व्यवस्था जस की तस ही रहती है देश में दक्षिण-पश्चिम मानसून अब पूरी तरह सक्रिय हो चुका है, लेकिन बारिश जहां एक ओर गर्मी से राहत लेकर आई है, वहीं दूसरी ओर कई राज्यों में यह आफत बन गई है. महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और जम्मू-कश्मीर समेत कई राज्यों में भारी बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है. भारी बारिश की वजह से कहीं-कहीं सड़कें तालाबों में बदल गई हैं, कहीं घरों और दुकानों में पानी भर गया है, तो कहीं पेड़ गिरने और तेज बहाव की घटनाओं ने लोगों की जान ले ली। सबसे ज्यादा तबाही देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में देखने को मिल रही है. हर साल मानसून से पहले करोड़ों रुपये खर्च कर जल निकासी, नालों की सफाई और आपदा प्रबंधन के दावे किए जाते हैं, लेकिन पहली ही तेज बारिश में इन दावों की पोल खुल जाती है. सवाल यह है कि आखिर मुंबई समेत देश के बड़े शहर हर साल बारिश में क्यों डूब जाते हैं? क्या इसके पीछे सिर्फ रिकॉर्ड बारिश का होना है या फिर सिस्टम की खामियां भी उतनी ही बड़ी वजह हैं? इस बार मानसून ने एक साथ कई राज्यों में दस्तक दी है. महाराष्ट्र से लेकर गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और जम्मू-कश्मीर तक लगातार हो रही बारिश ने सड़क, रेल और सामान्य जनजीवन को प्रभावित किया है. कई इलाकों में जलभराव की वजह से यातायात प्रभावित हुआ है, जबकि निचले इलाकों में रह रहे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए राहत और बचाव अभियान चलाया जा रहा है. हालात ऐसे बन गए हैं कि कहीं-कहीं गाड़ियां आधे पानी में डूबी दिखाई दी तो कहीं लोगों को रस्सियों के सहारे सुरक्षित बाहर निकालना पड़ा. कई स्थानों पर पेड़ गिरने, मकानों में पानी भरने और तेज बहाव में लोगों के फंसने की घटनाएं भी सामने आई हैं. मुंबई की पहचान देश की आर्थिक राजधानी के रूप में है. हर साल यहां करोड़ों लोग मानसून के दौरान अपनी रोजमर्रा की जिंदगी जारी रखते हैं. लेकिन हर साल की तरह इस बार भी कुछ घंटों की तेज बारिश ने शहर की तैयारियों पर सवाल खड़े कर दिए. मुंबई के कई इलाकों में सड़कें तालाब बन गई हैं. कई स्थानों पर गाड़ियों का आधा हिस्सा पानी में डूब गया. रेलवे ट्रैक पानी से भर गए, जिससे रेल सेवाएं प्रभावित हुईं. लोगों को घंटों तक जाम और जलभराव का सामना करना पड़ा। सबसे ज्यादा परेशानी निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को हुई, जहां घरों, दुकानों और पार्किंग तक में पानी भर गया. इससे साफ है कि बारिश का संकट केवल प्राकृतिक नहीं, बल्कि शहरी प्रबंधन की चुनौती भी है।

बाप-बेटे की फिल्मों की टक्कर से बॉक्स ऑफिस में बढ़ेगा रोमांच

तमिल सिनेमा में चौंकाने वाली बॉक्स ऑफिस टक्कर देखने को मिल सकती है. दरअसल जो रिपोर्ट्स सामने आ रही हैं उसके मुताबिक, एक्टर विजय थलपति और उनके बेटे की फिल्में एक साथ रिलीज हो सकती हैं. अगर ऐसा होता है तो ये देखना काफी रोमांचक होगा.एक्टर विजय थलपति ने 2025 में अपने एक्टिंग करियर को छोड़ने का ऐलान किया था. उन्होंने अपनी फिल्म 'जन नायकन' के ऑडियो लॉन्च पर ये जानकारी दी थी. अब ये मूवी 2026 में रिलीज होने वाली है. वहीं विजय थलपति के बेटे जेसन संजय का निर्देशन में डेब्यू होने वाला है. डायरेक्टर के तौर पर उनकी फिल्म 'सिग्मा' आने वाली है. जानकारी सामने आ रही है कि इन दोनों फिल्मों का टकराव देखने को मिल सकता है. 'जन नायकन' का फैंस को बेसब्री से इंतजार है, क्योंकि इस फिल्म को सेंसर बोर्ड से मंजूरी मिलने में देरी का सामना करना पड़ा है. वहीं जेसन संजय की पहली निर्देशित फिल्म 'सिग्मा' एक एक्शन कॉमेडी थ्रिलर होगी. चलिए जान लेते हैं दोनों फिल्मों की रिलीज से जुड़ी क्या आई है अपडेट. विजय थलपति के बेटे जेसन संजय द्वारा निर्देशित फिल्म 'सिग्मा' 31 जुलाई को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है. वहीं रिपोर्ट्स के मुताबिक, विजय थलपति की लास्ट फिल्म 'जना नायकन' को लेकर भी निर्माता इसी तारीख की रिलीज पर विचार कर रहे हैं. हालांकि ये भी जरूरी है कि फिल्म को सेंसर की मंजूरी टाइम पर मिले. कुछ खबरें सामने आई हैं, जिनमें कहा गया है कि फिल्म को सेंसर बोर्ड से, सर्टिफिकेट मिल गया है, लेकिन आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है. फिल्म को 23 जुलाई पर रिलीज करने का भी ऑप्शन है, लेकिन निर्माता इसे 31 जुलाई को इसलिए थिएटर्स में लाना चाहते हैं ताकि प्रमोशन के लिए टाइम मिल सके. विजय थलपति मुख्यमंत्री बनने के बाद से अपना पूरा फोकस राजनीति पर कर रहे हैं।

गन्ना किसानों को मिलेगा सामाजिक सुरक्षा का कवच

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेरणा एवं शासन के निर्देशों के क्रम में गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रदेश के लाखों गन्ना किसानों एवं उनके परिवारों को सामाजिक सुरक्षा का सुदृढ़ कवच प्रदान करने के उद्देश्य से 06 जुलाई से 11 जुलाई, 2026 तक प्रदेश की सभी सहकारी गन्ना विकास समितियों में विशेष सामाजिक सुरक्षा जागरूकता एवं नामांकन महाअभियान संचालित किया जाएगा। सामाजिक सुरक्षा अभियान के सम्बंध में गन्ना विकास विभाग द्वारा बताया गया कि यह अभियान केवल योजनाओं के प्रचार-प्रसार तक सीमित न होकर ग्रामीण उत्तर प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा की नई संस्कृति स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध होगा। अभियान के माध्यम से किसानों एवं उनके परिवारों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना , प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना अटल पेंशन योजना सहित भारत सरकार की विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ते हुए आर्थिक सुरक्षा, वित्तीय समावेशन तथा भविष्य की सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित की जाएगी। प्रदेश की सहकारी गन्ना विकास समितियां इस अभियान की मुख्य नायक के रूप में कार्य करेंगी। दशकों से किसानों के साथ विश्वासपूर्ण संबंध रखने वाली समितियां अब सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रचार-प्रसार, जागरूकता, नामांकन तथा लाभार्थियों तक योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करने में अग्रणी भूमिका निभाएंगी। इस प्रकार समितियां भारत सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने वाली प्रभावी संस्थागत व्यवस्था के रूप में स्थापित होगीं।

अभियान के दौरान प्रत्येक समिति परिसर में बैंकों, इफको, चीनी मिलों तथा अन्य सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त सहयोग से विशेष सहायता एवं नामांकन काउंटर स्थापित किए जाएंगे। किसानों को एक ही स्थान पर योजनाओं की जानकारी, पात्रता, दस्तावेजों का सत्यापन, बैंकिंग सहायता तथा तत्काल नामांकन की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही नए सदस्य पंजीकरण, बैंक खाते खोलने एवं अन्य आवश्यक सेवाओं की भी व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। गन्ना विकास विभाग द्वारा यह भी बताया कि इस अभियान का एक महत्वपूर्ण आयाम महिला स्वयं सहायता समूहों की सक्रिय भागीदारी है। महिला समूहों को विशेष रूप से आमंत्रित कर उन्हें बीमा, पेंशन एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ा जाएगा, जिससे ग्रामीण महिलाओं का वित्तीय सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता तथा परिवार की आर्थिक सुरक्षा और अधिक मजबूत होगी। यह पहल महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ आर्थिक निर्णयों में भी अधिक सशक्त बनाएगी। ग्राम स्तर पर गन्ना पर्यवेक्षक, समिति सचिव एवं अन्य विभागीय अधिकारी जनसंपर्क कर किसानों को उक्त योजनाओं के साथ गन्ना विकास विभाग, इफको, चीनी मिलों द्वारा गन्ना किसानों के हित में संचालित योजनाओं की जानकारी भी दी जायेगी तथा पात्र परिवारों का अधिकाधिक नामांकन सुनिश्चित करेंगे। अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु समाचार पत्रों, सोशल मीडिया, पोस्टर, बैनर, पम्पलेट, ग्राम सभाओं एवं किसान गोष्ठियों का भी आयोजन किया जाएगा। विशेषज्ञों का मानना है कि सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का व्यापक विस्तार किसानों की आय सुरक्षा, जोखिम प्रबंधन तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुर्घटना, आकस्मिक मृत्यु अथवा वृद्धावस्था जैसी परिस्थितियों में समय पर वित्तीय सहायता मिलने से किसान परिवार आर्थिक संकट से उबरने में सक्षम होते हैं तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होती है।

उत्तर प्रदेश गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग विभाग का लक्ष्य है कि इस महाअभियान के माध्यम से अधिकाधिक पात्र गन्ना किसान परिवार सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जुड़ें और प्रदेश का प्रत्येक गन्ना किसान परिवार सुरक्षित, सशक्त एवं आत्मनिर्भर बने। यह अभियान ष्विकसित भारतदृविकसित उत्तर प्रदेशष् के संकल्प को गति देने के साथ-साथ किसानों के समग्र कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा।

ब्रेड की जगह नाश्ते में खाएं ये पांच हेल्दी चीजें, दिनभर रहेंगे एनर्जेटिक

ब्रेड कई लोगों के नाश्ते का आसान और झटपट तैयार होने वाला विकल्प है. हालांकि, रोजाना इसका सेवन हर किसी के लिए बेहतर नहीं माना जाता. ऐसे में पोषण से भरपूर और जल्दी बनने वाले कुछ हेल्दी नाश्ते के विकल्प अपनाकर आप दिनभर तरोताजा महसूस कर सकते हैं। आजकल भागदौड़ भरी जिंदगी में कई लोग सुबह के नाश्ते में ब्रेड खाना सबसे आसान विकल्प मानते हैं. यह जल्दी तैयार हो जाती है, इसलिए अक्सर लोगों की पहली पसंद बन जाती है. हालांकि, रोजाना सिर्फ ब्रेड पर निर्भर रहना संतुलित नाश्ते का विकल्प नहीं माना जाता. खासकर मैदे से बनी सफेद ब्रेड में फाइबर और कई जरूरी पोषक तत्व कम होते हैं, जिससे पेट जल्दी खाली महसूस हो सकता है और बार-बार भूख लग सकती है। दिन की शुरुआत ऐसे नाश्ते से करनी चाहिए, जिसमें प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का अच्छा संतुलन हो. ऐसा नाश्ता लंबे समय तक एनर्जी बनाए रखने, पेट भरा रखने और शरीर को जरूरी पोषण देने में मदद कर सकता है. इसलिए ब्रेड की बजाय पौष्टिक विकल्पों को डाइट में शामिल करना बेहतर माना जाता है. आइए जानते हैं कि नाश्ते में ब्रेड की जगह कौन-सी हेल्दी चीजें खाई जा सकती हैं, हेल्दी नाश्ता तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और सुबह का नाश्ता क्यों नहीं छोड़ना चाहिए। ओट्स को हल्का भून लें. एक पैन में राई, करी पत्ता, प्याज, गाजर, मटर और शिमला मिर्च भूनें, फिर उसमें ओट्स और थोड़ा पानी डालकर पकाएं. यह फाइबर और कई जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर नाश्ता है, जो लंबे समय तक पेट भरा रखने और एनर्जी बनाए रखने में मदद कर सकता है।